गूलर के फूल

गूलर के फूल

शाह मन्ज़ूर आलम

प्रथम संस्करण १९८९

मूल्य–१०० रुपये

प्रकाशक :-
ख़ानक़ाह, ६३/२,
दि माल, कानपुर

मुद्रक :–
सानुबन्ध प्रकाशन
८/७६, आर्यनगर, कानपुर

नाचीज़ की बात

सुनने में भली लगे कानों से टकरा कर दिल में उतर जाय, ऐसे आसान लफ़्ज़ हों कि हर सुनने वाला अपनी पहुँच के मुताबिक़ मानी तक बिना किसी ग़ौरो फ़िक्र के पहुँच जाय और निहायत आसानी से समझ में आ जाने वाला मतलब तसवीरों में बदल जाय, सुनने वाला आशिक़ हो तो उसे उस ज़मीन तक पहुँचा दे जिसे बहिश्त कहते हैं। यानी ऐसी फ़िज़ा तैयार कर दे जहाँ झरने हों, फूलों से लदे दरख़्त हों, दरख़्तों पर चिड़ियों के चहचहे हों, हवा के झोकों में ख़ुशबू की हल्की लपट हो, महबूब हो, शीशओ साग़र में शराबे अरग़वानी हो, जीने की तमन्ना हो, उनके दामन से लिपट कर सारी उम्र ज़िन्दा रहने की आरज़ू हो, ऐसी ही नग़मों से भरी रसीली और खनक रखने वाली शायरी को जो रूह को ग़िज़ा दे, रूहानी शायरी कहते हैं। यही वज्दो हाल मस्ती और सरख़ुशी अता करती है और कैसी ही पायमाल ज़िन्दगी हो उसे रंगदार बनाकर ज़िन्दगी के क़दमों पर निछावर होने के लायक़ बना देती है।

इस शायरी का वह पहलू भी है जिसमें तमीज़, तहज़ीब, अदब–आदाब सिखाने की नसीहतों के ज़रिये दूसरों को कुछ बताने और सँवारने की कोशिश की जाती है। यह हिस्सा **'पैग़म्बरी'** से जुड़ा हुआ है। अक्सर कोशिश रूहानी दुनिया में ऐसी ही शायरी करने की, की गई है। लेकिन ज़्यादातर लोगों को ग़लतफ़हमी और खुशफ़हमी ही रही है। सच पूछिये तो कामिल, अकमल, मुकम्मल, फ़क़ीरी रखने वाले लोग भी इस तरफ़ नज़र कर सकने की हिम्मत नहीं कर पाते। कभी-कभी कोई पैदा हुआ और उसे यह नेआमत बख़्शी गई, तो वह दूसरों को नसीहत कर सकने का हक़ अदा कर गया और उसका असर भी पढ़ने और सुनने वालों पर पड़ा।

जाने आपको इस किताब से क्या मिले, लेकिन इतना ज़रूर कहूँगा कि—

"उनका तसव्वुर, उनकी बातें, उनकी याद"

तो इसकी हर सतर में छुपी हुई दिखाई देगी।

शाह मन्ज़ूर आलम

अपनी सीधी बात

किसी ने आज तक देखा नहीं केवल सुनते ही हैं कि गूलर के दरख़्त में एक फूल खिलता है और वह भी हर पूनों की आधीरात को महीने में एक बार। इस पर लोग संदेह ही करते हैं लेकिन हमने इस कथन को मान लिया जब अपने पीरोमुर्शिद के इस **'गूलर के फूल'** की एक सौ बहत्तर पंखुरियाँ दिखाई दीं। जिनको कोरे कागज पर एक क़लम से अपने सलोने सइयां की अनोखी रंग-बिरंगी-रूहानी-तसवीरों से सजाकर सचमुच गूलर का फूल बना दिया गया है।

इसकी हर पंखुरी राधाभाव से सजी और मज़हबे इश्क़ के रंगों में सराबोर दिखाई देती है।

एक गहरी डुबकी लगाकर कहीं भी किसी के पास कभी न दिखाई देनेवाले ऐसे अनमोल मोती सीप से निकालकर लाए गए हैं, जिनकी रूहानी चकाचौंध देख सकने की सामर्थ्य या क़ूवत कम से कम मेरे प्रज्ञा चक्षुओं को तो नहीं है। यक़ीनन ये मेरे ख़ुद को समझने के लिए 'गूलर के फूल' ही हैं।

'गूलर के फूल' और इसमें इतनी संख्या का समावेश होना भी संयोगमात्र ही नहीं है, अगर ग़ौर से देखा जाय तो फूल और उसमें पंखुरियों का योग 'एक' है जो 'एकोब्रह्मद्वितीयोनास्ति' की ओर उंगली उठाता है–

"कोई और ज़िन्दा मिला नहीं वही 'एक' बस वो ख़ुदा मिला"

विरहणी गोपियां अपने श्याम के लिए ऊधौ से संदेश

कहती हैं–

एक हुतो जो गयो श्याम संग को आराधै ईस
ऊधौ मन नाहीं दस–बीस

बस यही राधाभाव सूफी–महासंतों से अंकुरित हुआ है और इसी का विस्तारूप 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' में निहित है।

हम अधिक भटकाव में न जाकर अपने इस नासमझ मन को उस एक (तुम) में समा जाने की बात लिखना चाह रहे हैं वह एक बस तुम्हीं तो हो– सनम, साजन, बालम, प्रीतम, सइयां आदि तुम्हारे पर्याय नामों के जितने भी शब्दाक्षर दिल से उपजे हैं उसमें तुम हो तो एक ही।

दिल के दर्द से रह रहकर उपजी हुई निगोड़ी पीर के सांचे से सजी–संवरी हर पंखुरी को इश्क़ की गंगा में गोता लगवाया गया है और इसी में हमेशा के लिए डूब जाने, बेहोश हो जाने, दीवाना बन जाने व उसमें आत्मसात कर देने की बात ही उठती है। तुमको तन-मन में बसा लेने के बीच वाले समय में क्या-क्या हालात नहीं गुजरते हैं–

एक घड़ी ऐसी गुज़री जब आग लगी थी पानी में
जो कुछ था सब तुमने छीना डाका पड़ा जवानी में

तुम्हारे क़दमों तक पहुँचने के लिये एक-एक सीढ़ी को पीछे छोड़ता गया। मुझे अँधेरे में ढकेल ले जाने वालों ने बहुत बाधाएँ डालीं- चीखे चिल्लाए भी लेकिन तुम्हारे पीछे काम, क्रोध, मद,लोभ आदि सभी खराबियों को दूर भगाता हुआ तुम्हारे क़रीब पहुँच गया।

मेरी सोंच-समझ जब दूसरी तरफ़ पहुँचती है– मै अपने घर में चिराग़ की रोशनी तेज करके तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठा जागता हूँ। ऐसा लगता है तुम इसी स्थिति में मुझे लूट लेते हो मेरा सब कुछ छीन लेते हो। मैं अपने सामने ख़ुद को लुटवा रहा

हूँ- तुम्हें रोक सकने में असमर्थ हूँ- विवश हूँ।

क्योंकि- मन तुमसे लगा सो लगा बलमा

इसलिए तुम्हारे इश्क़ में सब सह रहा हूँ। यह एक ऐसी सहनशक्ति है जो तुमसे ही मिली है इसीलिए इसमें परम आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

हर हाल में तुम्हारी मोहब्बत मुझे क़ुबूल

क्योंकि- तुम बेवफ़ा नहीं हो मुझे ऐतबार है

क्या कहूँ तुमसे क्या-क्या न कहूँ। मज़हबे इश्क़ में दीन-धरम तो केवल यह जिस्म है जिसे हमने तुम्हें अन्दर बिठाकर तुम्हारे द्वारा ही धारण किया है। हम तुमसे कभी जुदा नहीं हो सकते और हम अपनी इस मोहब्बत के बीच कोई भी दुनियावी दलाल (बिचवानी) स्वप्न में देखना भी नहीं चाहते।

मंदिर-मस्जिद, गिरजाघर-गुरुद्वारा, काशी-काबा और तीरथ-धाम आदि जो भी दुनियावी आडम्बरीय खेल गढ़े गए हैं, यह सब तुमसे अलग भटकाने वाले रास्ते हैं, तुम तक सीधे पहुँचाने वाला रास्ता इनमें कोई नहीं है।

यह नाचीज़ तो ईश्वर को, ख़ुदा को-अल्लह रूप में निहार कर ख़ुद की हस्ती को मिटाकर, सीधा इश्क़ से तुमको मजबूत बाँधकर, तुम्हारे हुस्न की तसवीर देखते हुए तुम में समा जाना चाहता है।

सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार

हमका ई आकास न धरती तोहरै एक सहार

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में तुम ही एक सहारा हो। मेरे साजन ! सच है मै तुम्हारा ही हूँ और दृढ़संकल्पित हूँ कि हमेशा तुम्हारा ही रहूँगा।

"वक़्त कभी मिले अगर मेरी तरफ़ भी आइये"

ये व्याकुल दर्द गा-बजाकर ज़ोर-ज़ोर से तुम्हें पुकार रहा है, तुमको अपनी ओर आकर्षित कर रहा है- तुमसे विनती है इस दिल का ख़याल रखना।

यदि सूर ने अपने श्याम को अँधी आंखों में बसाकर पद गा-गाकर सूरसागर में मोहित किया है, तुलसी ने अपने राम की छवि विनयपत्रिका में निहारी है और बावरी मीरा ने अपने गोपाल को सर्वस्व वार करके विष पीकर रिझाया है तो निःसन्देह हमारे पीर साहब ने भी ये पंखुरियां दिल की महफ़िलों में महकाई हैं और हम सभी सूफ़ी भाइयों के लिए 'गूलर के फूल' में रूहानी रंग देकर तरतीबवार टांकी हैं जो हमारी ज़िन्दगी में रूहानी ताक़त व जज़्बात उपजाती रहेंगी। दुनियावी सड़न (अंधेरे) से बहुत दूर ढकेलती रहेंगी और निश्चितरूप से सनम की ओर जुड़ती रहेंगी-ज़िन्दगी को महकाती रहेंगी तथा बार-बार यक़ीनन रूहानी ज़िन्दगीवाली आत्माएं 'साईं के मंदिरवा में दियना जला जला' कर वह ज्योति अवलोकित करती रहेंगी।

मैं तो बिल्कुल नासमझ-मूरख हूँ। हां ! यदि अपने पीर सरकार ने कभी-कभार मुझे अपनी दुवा देने के क़ाबिल समझा-क़दमों में सुई की नोकवाली औक़ातभर जगह दी तो इस 'गूलर के फूल' की एक पंखुरी का कुछ रंग अवश्य दिल में उतर कर चढ़ जाएगा तभी अपनी ज़िन्दगी में पूरनमासी की वह आधीरात होगी जब अर्न्तदृष्टि से खिला हुआ फूल देख सकूंगा।

— कमलेश अमेठवी

(लखनऊ)

दो शब्द

बारि मथे घृत होय बरु, सिकता ते बरू तेल
बिन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल

'विधि निषेध' एवं 'नवधा भक्ति' की चहार दीवारियों से प्राय: मुक्त होकर, ध्यान के साथ, उस एक परमपिता का ही गुणानुवाद, सूफ़ी भक्तगण, कव्वाली के रूप में भी करते हैं। जाति, धर्म, पहनावा, भाषा, देश, काल आदि की कोई बाधायें यहाँ आश्रय नहीं पातीं-सूफ़ी साधना का स्वरूप साम्प्रदायिकता से बहुत भिन्न है।

शान्त भाव, दास्य-भाव, सख्य-भाव, वात्सल्य-भाव, गोपी-भाव एवं कान्त भाव के भी ऊपर 'महा भाव' (राधा-भाव) तक का सूफ़ी संतों की वाणी में समावेश है।

"भक्ति भक्त, भगवन्त, गुरू चर्तु नाम, वपु एक" को मान्यता देते हुए यह भी माना जाता है कि "गुरू गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय, – धन्य गुरू जो आपने गोविन्द दियो मिलाय"।

गुरूबिन भव निधि तरै न कोई
जो विरंच, शंकर सम होई

"यह सर आवत अति कठिनाई"

और

"बिन हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता"

संत शिरोमणि महाकवि कबीरदास जी की अमर वाणी में सूफ़ी सिद्धांतों का समावेश है। वह हमें छोटी कक्षाओं में भी

पढ़ने को मिली थी और बड़े-बड़े शिक्षाविद उस पर रिसर्च करते आ रहे हैं। पी एच० डी०, एवं डी० लिट० की डिग्रियां प्राप्त करने के पश्चात् भी रिसर्च में लगे हैं यह सूफ़ी-साहित्य है ही ऐसा। इस पुस्तक की रचनाओं में भी हमें कबीर की आत्मा का स्वर सुनाई पड़ता है, यह वाणी महापुरुष वाणी है, अमर वाणी है। इसके स्वरों में अनहद नाद तक भक्तों ने सुने हैं इसी तरह श्री अब्दुल रहीम खान खाना, श्री मलिक मोहम्मद जायसी, रसिक महाकवि रसखान ही नहीं, शत-शत सूफ़ी सन्तों ने, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान जो रसानुभूति हमें कराई है वह निश्चित ही दुर्लभ है, अथाह और अनन्त है।

हमारे 'सूफ़ी-विश्व-विद्यालय' के 'परमपूज्य सदगुरू, कुल-पति ने अभी तक इन रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति ही नहीं दी थी, मुरीदों को, भक्तों को, कभी कोई अपनी फोटू भी उतारने नहीं दी, कभी अपनी जीवनी भी लिखने नहीं दी, लेकिन "संत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पर कहा न जाना" और हमें इस संग्रह को प्रकाशित करने अमुमति मिली, यद्यपि इतनी कम संख्या में छापने की अनुमति मिली कि सब भक्तों तक को मात्र एक-एक पुस्तक मिलना कठिन हो जायगा।

पूर्व प्रकाशन 'रूहानी-गुलदस्ता' ही को ले लीजिए। उसमें मुख्यत: भारत के अनेक अवतारी महापुरुषों का बड़े-बड़े सूफ़ी संतों का जीवन-चरित्र है जो अन्यत्र अप्राप्य है, भक्त लोग उसका अनुवाद अंग्रेजी, मराठी, गुजराती भाषाओं में करने की प्रार्थना करते चले

आ रहे हैं लेकिन हम लोग भी जानते हैं कि हमारे 'पीर-मुर्शिद' दया और करूणा के सागर हैं, हमारी भावनाओं से अवगत् हैं, हम सब का सदा योगक्षेम वहन करते हैं तो यह प्रार्थनायें भी स्वीकृत हो ही जायेंगी ।

मुझे ये दो शब्द लिखते समय एक घटना याद आ रही है । एक बार एक संस्थान में बड़े–बड़े नेताओं की उपस्थिति में, पन्द्रह अगस्त को झण्डारोहण एक चपरासी से कराया गया । मेरे ऐसे, उस विश्व-विद्यालय के कनिष्टतम, नये विद्यार्थी को, दो शब्द लिखने की अनुमति देना न्यूनाधिक उसी प्रकार का है । आप तो जानते हैं कि 'बाँस' का संयोग यदि मिश्री के साथ हो जाय तो वह मिश्री के ही भाव बिक जाता है । पत्ते का संयोग यदि पान के साथ हो जाता है तो पत्ता तक महानपुरुषों के कर-कमलों तक पहुंचने का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है ।

'पारसपरत कुधात सुहाई'

इसका तात्पर्य यह हुआ कि पारस के गुण का लाभ उठा-कर कंचन बनने के लिए 'कुधात' यानी लोहा होना भी आवश्यक पात्रता है । पीतल, ताँबा, चाँदी उससे कहीं अधिक मूल्यवान होने पर भी पारस का सँग पाकर स्वर्ग नहीं बन सकते । यह सिद्धान्त "ला इलाह इललिल्लाह" का सहारा लिये हुए प्रतीत होता है । 'मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे । कि दाना ख़ाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है' । फिर 'करत-करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान' ।

इसी अभ्यास के मार्ग पर गुणानुवाद करते हुए सन्त प्रवर

भी कह गए, "भए भाँग से तुलसी तुलसीदास"
"मो सम कौन कुटिल खलकामी" कहने के पश्चात् सूरदास गुणानुवाद करते-करते दिव्य चिन्मय 'गौलोकधाम' को प्राप्त हुए। कबीर अपने को जुलाहा बताते रहे और इसी गुणानुवाद के सहारे "हमन हैं इश्क़ मस्ताना, हमन का होशियारी क्या" में पूरी तरह उतरकर "रमैया की दुलहिन लूटै बजार" कहते हुए "ढाई आखर प्रेम का" चिन्तन और अभ्यास करके अमर स्वरूप से बँधे।

"गूलर के फूल" की रचनायें भी उसी अभ्यास और गुणानुवाद को करते हुए गुणानुवाद और अभ्यास हेतु सृजित की गई हैं।

संसार में अवतारी सन्त आते रहते हैं लेकिन अपने को छिपाते हैं। अतएव उनकी लीला-काल में उनको पहचानना कठिन है और उससे भी कठिन है उनकी शरणागत होना।

इन रचनाओं की गहराई में जाकर दोनों हाथों हम मोतियाँ प्राप्त कर 'लख-चौरासी' से मुक्त हो सकते हैं, आवश्यकता है श्रद्धा और विश्वास की। जिन मौलिक सिद्धान्तों पर सभी धर्म आधारित हैं उन्ही मूल तत्त्वों से सूफ़ियों का खज़ाना भरा है, आज तक कोई उसे घटा तक न सका चाहे कितनी बड़ी से बड़ी ताकतें आयी हों। यह 'अजर', है 'अमर' है 'नित्य' है, एवं "सत्यं शिवम् सुन्दरम्" है। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति प्रतिदिन वर्द्धमानम् है।

—बाबा नानकशाह
कानपुर

ख़्याल हुआ कि पुराने ज़माने से गाये जाने वाले लोक-गीतों से जो हमारे वतन जौनपुर और क़रीब ही बनारस के इलाक़े में पूर्वी ज़बान के हों (भोजपुरी अलग ज़बान है गाजीपुर, आजमगढ़ और बलिया-छपरा में बोली जाती है) काम के बोल निकालकर उन्हें रूहानी सांचों में ढाल दिया जाय तो अब इस ज़माने में सूफ़ियों के समा का कुछ काम चले, हम सुनने वालों की इबादत भी हो और रूह को ग़िज़ा भी मिले । अब तक सूफ़ियों की समा में ज़्यादातर फारसी चीज़ें ही गाई जाती रही हैं और इसमें शक भी नहीं कि हमारे बुलन्दतरीन सूफ़ी फ़क़ीरों का फ़रमाया हुआ कलामे फ़ारसी क़ीमती ख़ज़ाना है । उसे हर हाल में जारी और बाक़ी रहना चाहिए । चाहे कुछ समझ में न आ सके फिर भी तबर्रुक समझकर ज़रूर सुना जाय । उनसे जाने कैसी-कैसी और कितनी जगमगाती हुई फ़ैज़ की धारें खुलती रही हैं, लेकिन जब समझ में आने की बात चाही जाए तो ज़रूरी है कि फिल्मी लाइन की क़व्वाली या गाना न सुनकर आसान ज़बान में रूह को ग़िजा देने वाली शायरी ही सुनी जाय ।

उर्दू ज़बान के शायर शुरू से ही सिर्फ़ ऐसी अदबी शायरी करते रहे हैं जिन्हें मुशायरों में पढ़ा जाय उन्हें लोग सुनकर वाह-वाह तो करें लेकिन उनसे क़त्तई कोई ग़िज़ा रूह की न पा सकें ।

इस जबान में थोड़े से ही शायर ऐसे पैदा हुए जो सूफ़ी फ़क़ीरी रास्ते के लोग थे। उनके क़लाम से लोग फ़ैज़ पाते हैं, उनकी तरफ़ हम भी न्याजमन्दी से देखते हैं और अदब से अपना सलाम पेश करते हैं।

मैंने कोशिश की इसी फ़ैज़ पा सकने की डगर पर चलने की और अपनी कही हुई चीजों में जैसा कि ऊपर बता चुका हूँ- लोक-गीतों के मुखड़े और पहले की कही हुई किसी आशिक़ की शायरी के मिसरे कहीं-कहीं समो लिए जिन्हें लोगों को बताने के लिए नीचे दर्ज किया जा रहा है–

१. अब ना पहिरब लाल चुंदरिया लोगवा नजर लगावें ना
२. अपने सैयां का झुलना झुलैबे मोर कोऊ का करीहै
३. ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया
यानी हुसैन इबने अली जाने औलिया
४. कजरा निहारें सब मोर गवन मोरा काहे ना लीना
५. कहीं बोले काग अरे मोरी गुईयां
६. झूमत आवें नन्द के लाला गलियों में नजरिया लग जइहै
७. झुलनियां ने हाय राम बड़ा दुख दीना
८. तुम पे दिल आ गया है ख़ुदा की क़सम
९. तुम तो सरजू जी कै पनियां पिया लहरिया मारै नाँ
१०. नदिया किनारे बेला किन्ने बोया
११. नदिया किनारे खड़ी मारे सिसकारी गोरी
रहिया निहारे कब अइहो बलमू
१२. पत राखो न राखो तोहार मरजी
१३. बाबा गंजेशकर मंगता हूँ तेरे दर का

१४. बलग़लउला ब कमाले ही कशफ़द्दुजा ब जमाले ही

१४. भुखिया न लागे पियसिया न लागै मोहिया लागै हो

१५. मार्‌यो हो करेजवा पे तिरछी नजरिया

१६. नजरिया छैला हमका बड़ा दुख दीहेवा

१७. मैं अपने पीर लासानी के सदक़े
मोईनुद्दीन अजमेरी के सदक़े

१८. मम्बये फ़ैज़े नबूवत हम विलायत हैदरी
आफ़ताबे चिश्तियाँ मख़दूम साबिर कलयरी

१९. मैंने जिस रंग में रंग लिया दिल वह कभी छूट सकता नहीं है

२०. रट के मैं पिया पिया हो गई पपीहरा
जियरा हेराइ गवा अरे मोरा जियरा

२१. रंगाय लेव चुनरी अरे मोरी धनियाँ
नाहीं तो ढल जाइ नमकीन पनियाँ

२२. शैख जी सहने मस्जिद में सिजदा करें
मंदिरों में पुजारी सनम चूम लें

२३. संदेसा मोरे बलमा से कहियो जाय
अकेली मैं ना झूलूँगी महराजा

२४. सइयां के नगर चलो गोरिया संभार के

२५. साईं के मंदिरवा में दियना जराय आई ननदी

२६. हम गवनवाँ न जाबै बिना झुलनी

२७. हमरी अटरिया आवो हो बालम
देखा देखी तनिक होइ जाय

२८. है ये एलान साक़ी का रिंदो जामो साग़र जो कोई उठाये

२९. हे गंगा मइया तोहै पियरी चढ़इबै
पियवा से कैदा मिलनवा हो राम

सूची-नामा

क्रम संख्या	विषय	पेज संख्या
१	अली गोसइयां साहब मोरे	४४
२	आज पूजे देवता चौक मा	१४६
३	आओ चलो जाने बहार	१४५
४	आरज़ू है यही मेरे दिल की	२१
५	अब न तड़पाओ ब्याकुल जिया	७८
६	अब ना पहिरब लाल चुंदरिया	८३
७	अज़ली नूर से चमकै रौजा	१३६
८	अब तो हम यह काम करेंगे	१८१
९	अपने सइयाँ का झुलना झुलइबे	१९२
१०	इस ज़मी पर आपकी ख़ातिर जो मतवाला हुआ	१४
११	इतनी है इल्तजाये मोहब्बत	६१
१२	इश्क़ नचाता है मुझे	१६१
१३	उठत जोबन नयना लड़गइलें री दइया	११७
१४	एक तसवीरे दिल हम बनाकर	६०
१५	एक नूर वाले का हर तरफ़ उजाला है	१३३
१६	ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया	३५
१७	ऐ ख़्वाजये कौनो मकां	६२
१८	ऐ जलवये जनाना तेरी ख़ैर	१२१
१९	कौन अलबेले की नार	११८
२०	कैसे न देखूँ यार की जानिब	१२६

४८	जब तक दिल में न आवें महराज	२४
४९	जोबनवाँ आपन हम तज दीन	५२
५०	ज़िन्दगी उनका ठिकाना पा गई	५६
५१	जब ज़िकरे अलख जगाता हूँ	६४
५२	जाने हया जब आप निगाहों में आ गये	१२३
५३	जोत जगी असमानी चुनर मोरी धानी	१४१
५४	झूमत आवैं नन्द के लाला	१२५
५५	झुलनियाँ ने हाय राम बड़ा दु:ख दीना	२००
५६	तुम्हरे गुम्बद पे लागी नजरिया	१८७
५७	तनी मारो नजरिया के तीर	१७२
५८	तुम पे दिल आ गया है ख़ुदा की क़सम	१५३
५९	तोहरी नगरिया में लागी बजरिया	१३०
६०	तुम्हरे दर पर कटै उमरिया	११९
६१	तुम्हरी किरपा कै कागा बोलन लागा	२२
६२	तुझपे निसार जानो दिल	३७
६३	तुम राजा हो इस नगरी के	५४
६४	तुम हो साजन मेरी दुनिया	७६
६५	तुम तो सरजू जी कै पनियाँ	१०६
६६	तुमसे बड़ी माँग माँग्यों हो मोरे ख़्वाजा	१०७
६७	तुम्हरे द्वारे आया जोगी	१०८
६८	तुम हो साजन सबसे आला	१७९
६९	तुम दया धरम की नजर रखना	२०५
७०	तोरी प्यार भरी बतियाँ सुन-सुन	२०६
७१	थिरक थिरक जाये जियरा	१४७
७२	थी निगाहे इश्क़ की दिलबरी	१६६
७३	दिल बाँध ले उस ज़ुल्फ़ से	१०
७४	दिल उठा लाया हूँ कितने चाव का पाला हुआ	३६
७५	दिल में अली नज़र में अली जाने जाँ अली	६३

	दुनिया से क्या कहना सुनना	
७६	दम है ख़्वाजा मुझको दम दो	७२
७७	दिल के अन्दर दिलवर जानी	८५
७८	दिल से निकली ये आवाज़	८८
७९	देबै रे मलिनियाँ तोहे हार गजमोतिया के	१६०
८०	दुनिया हो मोहब्बत की रग-रग में समाये हो	१६७
८१	धुन धुन धुन धुन धुन री सजनी	१५४
९२	नज़रे करम हो शाहे उमम हो	९८
८३	नज़रों में समा जाओ	२६
८४	नाम बतावै न पता ही बतावै	२९
८५	नियरे हो बालम और तनि नियरे	३३
८६	नदिया बही जाय गोरी कैसे नहाऊँ	९२
८७	नबी जी नबी जी रटै पिंजरे में सुगनवाँ	९५
८८	नदिया किनारे बेला किन्ने बोया	१२६
८९	नदिया किनारे खड़ी मारे सिसकारी	१४९
९०	नूर के साँचे में दिल ढलने लगा	१६२
९१	पीर तोरी चौखट पे बोले लाल मुनियाँ	२०८
९२	परदे में ग़ैब ग़ैब के दिल में जमाल है	८
९३	पिया पिया रटना करे पिया कै पियरवा	४०
९४	पिया मोहे बेगुन बनी मत छोड़यो	५५
९५	पत राखो न राखो तोहार मरजी	५७
९६	प्रेम पुजारी लालस राखै नैना मूँद न पावे	१४३
९७	पाक पंजतन सात इमाम	१९१
९८	फूले फूल तो रतिया मँहकै	१७५
९९	फूल गेंदवा मंगाओ श्याम पय्याँ पड़ू	४७
१००	बाबा गंजे शकर मंगता हूँ तेरे दर का	१०४
१०१	बस यार तुहीं बाट्या दिलदार तुहीं बाट्या	१८
१०२		२०

४८	जब तक दिल में न आवें महराज	२४
४९	जोबनवाँ आपन हम तज दीन	५३
५०	ज़िन्दगी उनका ठिकाना पा गई	५६
५१	जब ज़िकरे अलख जगाता हूँ	६४
५२	जाने हया जब आप निगाहों में आ गये	१२३
५३	जोत जगी असमानी चुनर मोरी धानी	१४१
५४	झूमत आवैं नन्द के लाला	१२५
५५	झुलनियाँ ने हाय राम बड़ा दुःख दीना	२००
५६	तुम्हरे गुम्बद पे लागी नजरिया	१८७
५७	तनी मारो नजरिया के तीर	१७२
५८	तुम पे दिल आ गया है ख़ुदा की क़सम	१५३
५९	तोहरी नगरिया में लागी बजरिया	१३०
६०	तुम्हरे दर पर कटै उमरिया	११९
६१	तुम्हरी किरपा कै कागा बोलन लागा	२२
६२	तुझपे निसार जानो दिल	३७
६३	तुम राजा हो इस नगरी के	५४
६४	तुम हो साजन मेरी दुनिया	७६
६५	तुम तो सरजू जी कै पनियाँ	१०६
६६	तुमसे बड़ी माँग माँग्यों हो मोरे ख़्वाजा	१०७
६७	तुम्हरे द्वारे आया जोगी	१०८
६८	तुम हो साजन सबसे आला	१७९
६९	तुम दया धरम की नजर रखना	२०५
७०	तोरी प्यार भरी बतियाँ सुन-सुन	२०६
७१	थिरक थिरक जाये जियरा	१४७
७२	थी निगाहे इश्क़ की दिलबरी	१६६
७३	दिल बाँध ले उस जुल्फ से	१०
७४	दिल उठा लाया हूँ कितने चाव का पाला हुआ	३६
७५	दिल में अली नज़र में अली जाने जाँ अली	६३

	दुनिया से क्या कहना सुनना	७२
७६	दम हे ख़्वाजा मुझको दम दो	८५
७७	दिल के अन्दर दिलवर जानी	८८
७८	दिल से निकली ये आवाज़	१६०
७९	देबै रे मलिनियाँ तोहे हार गजमोतिया के	१६७
८०	दुनिया हो मोहब्बत की रग-रग में समाये हो	१५४
८१	धुन धुन धुन धुन धुन री सजनी	९८
९२	नज़रे करम हो शाहे उमम हो	२६
८३	नज़रों में समा जाओ	२९
८४	नाम बतावै न पता ही बतावै	३३
८५	नियरे हो बालम और तनि नियरे	९२
८६	नदिया बही जाय गोरी कैसे नहाऊँ	९५
८७	नबी जी नबी जी रटै पिंजरे में सुगनवाँ	१२६
८८	नदिया किनारे बेला किन्ने बोया	१४९
८९	नदिया किनारे खड़ी मारे सिसकारी	१६२
९०	नूर के साँचे में दिल ढलने लगा	२०८
९१	पीर तोरी चौखट पे बोले लाल मुनियाँ	८
९२	परदे में ग़ैब ग़ैब के दिल में जमाल है	४०
९३	पिया पिया रटना करे पिया कै पियरवा	५५
९४	पिया मोहे बेगुन बनी मत छोड़यो	५७
९५	पत राखो न राखो तोहार मरजी	१४३
९६	प्रेम पुजारी लालस राखै नैना मूँद न पावे	१९१
९८	पाक पंजतन सात इमाम	१७५
९७	फूले फूल तो रतिया मँहकै	४७
९९	फूल गेंदवा मंगाओ श्याम पय्याँ पड़ू	१०४
१००	बाबा गंजे शकर मंगता हूँ तेरे दर का	१८
१०१	बस यार तुहीं बाट्या दिलदार तुहीं बाट्या	२०
१०२		

१०३	बल ग़लउला ब कमाले ही	५८
१०४	बदरा जो बनके अँगना बरस देव	१२०
१०५	बीरन मेरे मेरी आस निभाना	१२७
१०६	भुखिया न लागे पियसिया न लागै	६७
१०७	मानो मानो मोरा कहनवाँ	२०३
१०८	मोरे मन माँ बसे हो मोरे तन माँ बसे हो	१९०
१०९	मेरा हाथ पकड़ लो दाता	३
११०	मार्‌यो हो करेजवा पे तिरछी नजरिया	२
१११	मेरे दिल के आइने में कोई ऐसा ख़ूबरू है	१७
११२	मेरे तसव्वुर की दुनिया है	२८
११३	मेरे दिल में दिलवर मेरे	४३
११४	मनवाँ मा मोरे बिराजे हमार पिया	४९
११५	मोर चुँदरिया रंग देव ऐसी हे बालम रंगरेज	५०
११६	मोहब्बत देख लेना इस तरह तुमसे जुड़ी होगी	५३
११७	मनवाँ डोले तनवाँ डोले	५९
११८	मैं क्या मेरी ख़ाक भी एक दिन उस कूचे में जायेगी	७३
११९	मुझको इश्क़ नचाता है या मस्त क़लन्दर	८६
१२०	मोरे लखिया बाबुल ख़्वाजा	८९
१२१	मनई का रूप धरे सजना हैं मानो	९६
१२२	मैं अपने पीर लासानी के सदक़े	१०२
१२३	मै वारी वारी वारी ख़्वाजा बनरे पर	११०
१२४	मैं तो बिकाय गई गोइयां	११३
१२५	मम्बये फ़ैजे नबूवत हम विलायत हैदरी	१२२
१२६	मैनै जिस रंग में रंग लिया दिल	१३२
१२७	मन मन्दिर के राम ख़्वाजा करे सलाम	१३७
१२८	मन तुमसे लगा सो लगा बलमा	१५६
१२९	मेरी दीवानगी काम आ ही गयी	१६३
१३०	मेरा यार बड़ा अनमोल	१७१

	माँगी मुराद हम पाये-पीर मोरे जुग-जुग जीओ	१७७
१३१	या तो ये ज़िन्दगी सही	४६
१३२	ये दर्द तुमको पुकारता है	६३
१३३	ये तमन्ना है कभी इस दिल में भी आ जाइये	१५७
१३४	रट के मैं पिया पिया हो गयी पपिहरा	१६८
१३५	राजा मेरा राजा मेरा राजा मेरा ख़्वाजा	१५
१३६	रोम रोम में हरदम जारी	३१
१३७	रंगाय ल्यो चुनरी अरे मोरी धनिया	६७
१३८	राम गली प्रेम बेल बाढ़ी सँवरिया	१८६
१३९	लाओ जाम सुराही	१६४
१४०	लो चमका वह रोशन चेहरा	११६
१४१	लेगा खबरिया कौन हमारी	६
१४२	वो नाज़ भरी मस्ती मैख़ाने में लहराई	८
१४३	वक़्त कभी मिले अगर मेरी तरफ़ भी आइये	५१
१४४	वो आलमे मस्ती है साक़ी कि निगाहों में	१३५
१४५	वह ज़िक्र दम ब दम है	१६८
१४६	शाह चिराग़ के रौजे ननदी हो	१५०
१४७	शैख़ जी सहने मस्जिद में सजदा करें	१७८
१४८	शहंशाहे जहाँ इस दिल में पैदा कर लिया मैंने	२०७
१४९	सब पर करम है तेरा काम	४१
१५०	साथे राख्यो हो मोरे सजना	६९
११५	संदेशा मोरे बलमा से कहियो जाय	७०
१५२	सुनो सुनो ये हिकायते दिल	७४
१५३	सनम परस्ती में उनको सजदा नहीं करोगे तो क्या करोगे	८४
१५४	सइयाँ के नगर चलो गोरिया सम्भाल के	१५८
१५५	सजदये इश्क़ आपको रस्मे वफ़ा को बन्दगी	१८९
१५६		

१५७	सच हो साजन तोहरै बाटी	१९४
१५८	सइयाँ दगेबाज मोरा जियरा डेराला	१९६
१५९	साईं के मन्दिरवा में	२१०
१६०	हे सरकार निज़ाम तुफ़ैले ख़ुसरो आक़ा	१५५
१६१	हे राम सुनिहो अरजिया हमार	१
१६२	हमारा दिल कहीं भरता नहीं	६६
१६३	हमका नचाओ श्याम- जैसे जिया चाहे	७७
१६४	हे पंजतनी पाक इमाम कूकुर हूँ मैं तुम्हरे दर का	८१
१६५	हे सजनी हे सजनी हे सजनी आओ	९१
१६६	हम गवनवाँ न जाबै बिना झुलनी	११४
१६७	हमरी अटरिया आओ हो बालम	१२४
१६८	हमहूँ नहाइ लीन गंगा	१८५
१६९	है ये एलान साक़ी का रिन्दो	१८८
१७०	हाथ बाँध आये हैं दर पर तुम्हारे	१९७
१७१	हे गुरु बालम जाने आलम	२०१
१७२	हे गंगा मइया तोहै पियरी चढ़इबै	२०२

★

हे राम सुनिहौ अरजिया हमार !

[१]

एकै अरज है ई दियना जरत रहै
किरपा तुम्हारी निस दिन मिलत रहै
रहे उजियार अंधेरा कटत रहै
तोहरा मंदिरवा जगमग करत रहै
हे राम ! ... ...

[२]

हमरे अंगनवां में चन्दन लगाइ देव
वही पेड़वा पे कोयलिया बिठाई देव
झूम – झूम बोले जियरा झुमाई देव
बस हमका तुम बौरी बनाइ देव
हे राम ! ... ...

[३]

तुम्हारे सहारे ही जीवन कटेगा
भिखारी को दाता तुम्हीं से मिलेगा
तुम्हारे ही दर पर ये कुत्ता पलेगा
तुम्हारे करम ही से ज़िन्दा रहेगा
हे राम ! ... ...

मार्‌यो हो करेजवा पे तिरछी नजरिया, नजरिया छैला हमका बड़ा दुःख दीहेवा
नैनवाँ कटरिया चमके जस बिजुरिया, बिजुरिया छैला हमका बड़ा दुःख दीहेव

जुहिया कै फुलवा हथवा लगावै, देवरा नदान फुलवा कुम्हीलावै
गुन ढंग नाहीं बिछावै सेजरिया, सेजरिया छैला हमका बड़ा दुःख दीहेव

पतरा बलमुवा जस अंगूठी कै नगिनवाँ, लचके कमरिया जैसे बाँस कै कैयनियां
बाँस कै कैयनियां जैसे काली सी नगिनियाँ, नगिनियाँ छैला हमका बड़ा दुःख दीहेव

सूनी-सूनी रतिया मन तड़पावै, होत बिहान गजरा कुम्हीलावै
काहे लीआए बैरी गवनवा, गवनवा छैला हमका बड़ा दुःख दीहेव

जादू चलावै मड़वा सजावै मधुवा पिलावै मन बौरावै
नयनवाँ मां इनके अटका बा परनवाँ, परनवाँ छैला हमका बड़ा दुःख दीहेव

[३]

मेरा हाथ पकड़ लो दाता
हे अबदुल क़ादिर जीलानी
जै हो तुम्हारी
जै जै जै जै जै जै जै
जै हो तुम्हारी

[१]

नूरो पेड़ लगाया तुमने अली वली की खास निशानी
तुम हंसा आकाश सरोवर निर्मल जोती छबि नूरानी
हे अबदुल क़ादिर जीलानी

[२]

तुम्हरे द्वारे देवता ठाढ़े जोड़े हाथ बड़ाई मानी
ग़ौस क़ुतुब सब तुमसे ज़िन्दा सगरो जगत में तुम लासानी
हे अबदुल क़ादिर जीलानी

[३]

मैं क्या मैं तो एक बिचारा नूर तुम्हारा जीवन दानी
मेरी मिट्टी को भी चमक दो पाक इसे करदो सुबहानी
हे अबदुल क़ादिर जीलानी

[४]

कैसे छूटी गांठ जोड़िबो जुलम भयो नांय !

आधी रात सपना देख्यौं
मोरी निंदिया टूटी
कैसे छूटी गांठ जोड़िबो
जुलम भयो नांय

(१)

निंदिया कै मातल जमुनिया तर सुतली
टपके जमुनिया दाग पड़ि जाय
सजन ई दाग पड़िबो जुलम भयो नांय
कैसे छूटी गांठ ... ...

(२)

बगिया फूलै बेला मैं अनजानी
फुलवा चुनन गई मैं दीवानी
भीनी भीनी महके मोरी जवानी
सजन गजरा गले पड़िबो जुलम भयो नांय
कैसे छूटी गांठ ... ...

(३)

रंग बिरंगा खिलौना देखावे
हाथ बढ़ावे और ललचावे
पास बुलावे नैन झमकावे
सजन ई सेजिया चढ़िबो जुलम भयो नांय
कैसे छूटी गांठ ... ...

(५)

छाया हुआ हर एक तरफ रंगे यार है,
पहलू में दिल है दिल के चमन में बहार है।

ज़िन्दा हूं इसलिए कि मुझे तुमसे प्यार है,
इस प्यार पे तो मेरा दिलो जाँ निसार है।

हर हाल में तुम्हारी मुहब्बत हमें क़ुबूल,
तुम बेवफ़ा नहीं हो हमें ऐतबार है।

हमतो जो दिल की बात थी कहनी वो कह चुके,
और इसके बाद फिर तो तुम्हें अख़तियार है।

उससे तमाम ज़िंदगी लिपटी रही हयात,
वह यार ही तो मेरा सुकूनो क़रार है।

(६)

लेगा खबरिया कौन हमारी
तुम बिन कौन सुनेगा
हुज़ूर मेरा कोई नहीं,
करना नज़र सरकार
हुज़ूर मेरा कोई नहीं,

[१]

जब ऐ सबा तू तैबा को जाना
मेरी तरफ से उनको सुनाना
तुम्हारी ख़ुदाई तुम्हारा ज़माना
तुम बस नज़र से न अपनी गिराना
करना नज़र सरकार
हुज़ूर ... ...
... ...

[२]

काली कमलिया कांधे तुम्हारे
दाता हमारे बीरन हमारे
औरों में क्या है हम क्या बिचारे
ये संसार तुम्हारे सहारे
करना नज़र सरकार
हुज़ूर ... ...
... ...

[३]

रंगे जुनूँ के आलम ही न्यारे
कश्तिये दिल है तुम्हारे हवाले
कैसा मुक़द्दर कैसे सहारे
काफ़ी है इतना बस तुम हमारे
करना नज़र सरकार
हुज़ूर मेरा ... ...
... ...

[७]

पीर तोरी चौखट पे बोले लाल मुनियाँ
बोले लाल मुनियाँ तो झूमे सारी दुनियाँ

(१)

मेरे जुनूँ में रंगे वफ़ा है
मैं हूँ पुजारी वह देवता है
मुझको तो खाली इतना पता है
कि उसके ही दर से मुक़द्दर जुड़ा है

पीर तोरी ... .
... ...

(२)

हमारी सदा थी सदा कौन सुनता
भिखारी की झोली भला कौन भरता
नज़र इतनी हमपर कोई भी न करता
अगर वह मसीहा न बनकर उतरता

पीर तोरी ... ...
... ...

(३)

ये दिल और दिल की तमन्ना है तुमसे
ख़ुदा हो ख़ुदा और ये बन्दा है तुमसे
ये सूरज तुम्हारा ये चन्दा है तुमसे
सुनो ये किजो कुछ है ज़िन्दा है तुमसे

पीर तोरी ... ...
... ...

[८]

वो नाज़ भरी मस्ती मैख़ाने में लहराई
मैकश के मुक़द्दर से शीशे में उतर आई

उस जलवये रंगीं की जब देख ली रानाई
फिर शै कोई दुनियाँ की आँखों को नहीं भाई

पहलू में लिये अपने हम उनके तसव्वुर को
तसवीर सरापा थे दुनियाँ थी तमाशाई

जब उनकी नज़र दिल के पैमाने से टकराई
बीमारे मुहब्बत को जीने की अदा आई

तक़दीर हमारी भी तक़दीर रही होगी
हमको जो सरे कूए महबूब बुला लाई

(९)

दिल बाँध ले उस जुल्फ़ से इस राह में दीवाना बन

खाकर क़सम उस जुल्फ़ की साग़र उठा मस्ताना बन

आशिक़ हुआ मजनू बना दर-दर फिरा रुसवा हुआ

ये ज़िन्दगी कुछ काम की गर बन सके अफ़साना बन

पीरे मोग़ाँ का हुक्म है कर मैकशी साग़र उठा

ये आग ही है ज़िन्दगी डरता है क्या मस्ताना बन

ज़रीं कमर रंगीं असर जाने जिगर वो शम्मा रू

अपनी जो चाहे आबरू ख़ुद को मिटा परवाना बन

ये ज़िन्दगी एक रक़्स है आ मस्त होकर रक़्स कर

इस कूचवो बाज़ार में दीवाना बन दीवाना बन

[१०]

ख़्वाजा हो तोहरी नज़र अलबेली

अबकी बरस मोरी चूनर रँग देव
सब सखियन में चुंदर मोरी मैली

[१]

ख़्वाजा हो चिश्ती शान दिखाओ
अपने करम की आन बढ़ाओ
ख़्वाजा तुम्हीं महाराजा कहाओ
रंग और नूर के दरिया बहाओ

अब की बरस मोरी चुंदर रंग देव
सब ... ...

[२]

तुम तो ए ख़्वाजा जाने जहाँ हो
बाग़े एरम हो जन्नत निशाँ हो
धरती के ऊपर तुम आसमाँ हो
वरना तो फिर ये रौनक़ कहां हो

ख़्वाजा हो तोहरी नज़र अलबेली

अब ... ...
... .

[३]

ख़्वाजा निजाम के द्वारे जो रहिये
गंजे शंकर जी से आस लगैये
बाबा क़ूतुब जी को सजदा जो करिये
तो ख़्वाजा मोईन से काहे न कहिये

कि अबके बरस... ... ...

... ...

[४]

हासिले दौलते क़लबो नज़र हो
दिल में हमारे तुम्हारा घर हो
दर पे तुम्हारे हमारा सर हो
हम पर ए ख़्वाजा ऐसी नज़र हो

कि अबकी बरस... ....

[११]

जब करम हो गया ज़िन्दगी आ गई ग़ुन्चये दिल खिला मुस्कुराने लगा
मुस्कुराता हुआ यार आया मेरा अब तो उनको मेरा दर्द भाने लगा

रख के सर सो गया ख़्वाब में खो गया याद उनकी जो आई तो राहत मिली
कोई दीवाना बनकर जिया तो जिया वरना दुनियाँ का ग़म दिल जलाने लगा

एक तस्वीर थी एक था आइना सारे आलम में बस एक की धूम थी
एक ही पे जब अपनी नज़र रुक गई रूह जागी जहाँ जगमगाने लगा

इश्क़ को चाहिए हुस्न की बन्दगी जिसने की बन्दगी ज़िन्दगी पा गया
उनके क़दमो पे सर रख दिया जिसने भी वह चमन बन गया मुस्कुरानेलगा

देखकर उनको भूले हज़ारों सितम रह गया याद बस वो सनम ही सनम
एक मुद्दत से था मुबतिलाये अलम दर पे उनके ये दिल अब ठिकाने लगा

-★-

[१२]

इस जमीं पर आपकी ख़ातिर जो मतवाला हुआ
गुलशने हस्ती में खिलकर वह गुलो लाला हुआ

नाज़ की बातें सुनो अन्दाज़ वाले को तको
जो क़दम पर गिर गया उसके वही आला हुआ

मैं क्या मेरी क्या हक़ीक़त आप पे ज़ाहिर है सब
जानो तन सब आपकी नज़रों का है पाला हुआ

हुस्न है वह जलवा गाहे दो जहाँ सरता क़दम
जिसने भी देखा उसे वो ज़िन्दगी वाला हुआ

मेरे दम के साथ उसकी याद जलवागर रही
रौनक़े दुनियाँ-व-दीं बस वो करम वाला हुआ

-★-

[३]

सात समन्दर पार को डेरा बस्ती बसी सुहागिन खेरा
नूरी आलम नूरी घेरा दूल्हा बना है ख़्वाजा मेरा

ख़्वाजा

ख़्वाजा मेरा ... ...

राजा मेरा... ... ...

[४]

दाता मेरे भला हो तेरा मैं हूँ मँगता तेरे दर का
तुझसे नाता शामो सहर का मैं बन्दा हूँ तेरे घर का

ख़्वाजा

ख़्वाजा मेरा ... ...

राजा मेरा... ... ...

[१४]

मेरे दिल के आइने में कोई ऐसा ख़ूबरू है
कि हर एक लमहा तन मन मेरा उसके रूबरू है

वो सनम मेरा कि जिस पर है निसार दोनों आलम
उसे देखने चली तो यह नज़र भी बावज़ू है

मेरा जज़्ब एक ख़ज़ाना मेरा इश्क़ एक नेयामत
यही जानो दिल है मेरा यही मेरी आबरू है

मेरी जान जब भी निकले तो उसी गली में निकले
वो गली मेरी नज़र में मेरी जाने आरज़ू है

किसी और का तसव्वुर जो रूँ तो मर ही जाऊँ
ये करम की बात है कि मेरे साथ तू ही तू है

[१५]

बाबा गंजे शकर मंगता हूं तेरे दर का

मेरी झोली भरो आस पूरी करो

दिल में मेरे रहो अब करम ये करो

खाली जाये नहीं ये सवाली तेरा

बाबा गंजे शकर... ... ...

(१)

दिल उठा झूमकर

उनका दर चूमकर

ये गदाई भी क्या

बादशाही भी क्या

सब है सदका उसी दर का

सदक़ा देना मुझे

सदक़ा ख़्वाजा मोईन

बाबा क़ुतुबुद्दीन

बाबा गंजे शकर ... ...

... ...

(२)

ऐ मसीहे ज़माँ
जान जाने जहाँ
दर से जाये कहाँ
ऐसा पाये कहाँ
कश्तिये दिल का ये नाख़ुदा

सदक़ये पञजतन बाबा हसन निज़ाम
अपने महबूब का
देना सदक़ा मुझे अपने महबूब का

बाबा गंजे शकर ... .
... .

यूँ ही चलता रहे
यूँ ही बँटता रहे
लंगर तेरे महबूब का

बाबा गंजे शकर ... ...
... .

[१६]

बस यार तुहीं बाट्या दिलदार तुहीं बाट्या

हमसे गरीबवन कै संसार तुहीं बाट्या

का हार फूल लावे का दीप जल चढ़ावे

जिउ जान हो निछावर अस यार तुहीं बाट्या

सगरो जगत में महकी ख़ुशबू तोहार बालम

फूलों में हर चमन के सिंगार तुहीं बाट्या

ज़िन्दा तुम्हारे दर से मँगता तोहार बाटै

ऐसन रहम करैय्या सरकार तुहीं बाट्या

पतवार है सलामत मँझधार क्या करेगा

हे नाव के खेवैय्या पतवार तुहीं बाट्या

[१७]

आरज़ू है यही मेरे दिल की इस तरह उनको दिल में बसाये
कि चमन ज़िन्दगी का हरा हो फूल बनकर कली मुस्कराये

ऐसी नज़रे करम है कि बन्दा माजराये करम क्या सुनाये
यानी मेरा ख़ुदा वो ख़ुदा है जान जिस पर निछावर हो जाये

हुस्न ख़ुद अपनी सूरत में आकर चार जानिब तजल्ली दिखाये
देख ले जो नज़र भर के उसको याद जो कुछ हो सब भूल जाये

की यही जब भी कुछ इल्तिजा की साक़ी से बस यही हमने माँगा
ज़िन्दगी मैकदे ही में गुज़रे उम्र सारी यहीं बीत जाये

क़ाफ़िला दिल का था जिसके आगे जाल दुनियाँ ने कितने बिछाये
हम मगर धुन में अपनी जो निकले तो क़दम फिर कहीं रुक न पाये

[१८]

तोहरी किरपा कै कागा
बोलन लागा
दर पे तुम्हारे ख़्वाजा
भाग मोरा जागा
ख़्वाजा मोरा महराजा
भाग मोरा जागा

[१]

कैसे बताऊँ कैसी बनी है
मैली चुँदरिया कैसी रंगी है
सलमा सितारा मोती जड़ी है
ख़्वाजा हमारा कैसा धनी है

तोहरी किरपा कै कागा ... ...
भाग मोरा जागा ... ...

[२]

जगत महराजा की रैनी चढ़ी है
नूर की चादर कैसी तनी है
बदरी रहम की कैसी घिरी है
हमेशा गरीब की बिनती सुनी है

ख़्वाजा मोरा महराजा
भाग मोरा जागा
... ...

(३)

रोज़ नया एक रंग दिखावें
अपने ग़ुलाम का जीउ जियावें
पालन हार हैं ख़्वाजा कहावें
धरती से आकाश मिलावें

ख़्वाजा मोरा महराजा
भाग मोरा जागा
... ...

[१९]

जब तक दिल में न आवें महराज
आस नहीं कुछ भी मिलने की
तब तक दुनियाँ नही जीने की

[१]

प्रेम डगर की बात बड़ी है
सीधी दर पे उनके गयी है
जिसको भी यह राह मिली है
उसकी ही बस अरे बात बनी है

जब तक ... .

....

[२]

सिजदये संगे दर जो अदा हो
तब कुछ जानो दिल का भला हो
तन मन उनके हाथ बिका हो
तब क्या बताऊँ दुनियाँ में क्या हो

जब तक ... ...

... ...

[२५]

नाम बतावे न पता ही बतावे

तुझे कैसे कोई ढूंढे रे संवरिया

तुझे पाऊँगा ज़रूर

पास आऊँगा ज़रूर

ज़रा ढूंढन दे

[१]

फूल खिला फूलों में फूल आसमानी

जिसकी नज़र पहुंची उधर हो गई दीवानी

प्रेम डगर एक वही ख़ाक वही छानी

दुनिया ने लाख कहा हमने न मानी

तुझे पाऊंगा ज़रूर ....

....

....

[२]

उनके नाम का टीका देंगे इश्क़ नगर आबाद करेंगे

उनको देख के ज़िन्दा होंगे उनपे निछावर जान करेंगे

तुझे पाऊँगा ज़रूर ... .

....

(३)

क़ुतुब बनावें मोती माला
दिया फ़रीद ने झूमर बाला
चून्दर छापी साबिर आला
पिया निज़ाम से पीकर प्याला

पास आऊँगा ज़रूर ... ...
.....

[४]

ब्याह कियो गवन नहिं लायो
रहिया तक्यों निरमोही न आयो
प्रीति को मनवा भुलाई न पायो
ऐसी किये हो तो काहे रिझायो

कौन ख़ता हम कीन
नाम बताये न ....
.....

[२६]

ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया
यानी हुसैन इबने अ़ली जाने औलिया
(शाह नियाज़)

लेकर चला हूँ नज़रे जुनूँ बारगाह में
यह कायनात पलती है जिनकी पनाह में
मेरे इमाम ख़ास हैं अपनी निबाह में
ऐसा कोई करीम नहीं है निगाह में

ऐ दिल बगीर... ... ...
....

लुतफ़ो करम सरापा हैं दर्द आशना भी हैं
वो दिल नवाज़ दोस्त हैं अहले वफ़ा भी हैं
शमशीर बे नयाम बराए दग़ा भी हैं
बेकस के कार साज़ ज़मीं के ख़ुदा भी हैं

ऐ दिल बगीर ....
....

[२८]

तुझपे निसार जानो दिल अब तो किया जो हो सो हो

कुछ भी नहीं तेरे सिवा याद रहा जो हो सो हो

साक़ी की चश्मे नीम बाज़ काम जो अपना कर गई

डूब के मैकदे में दिल कहने लगा जो हो सो हो

कूचये दिल में आके जब मस्ते शराब हो चुका

होश की बात कुछ नही भूल भी जा जो हो सो हो

जिसको नसीब से मिला सिजदये संगे दर तेरा

फिर वो तमाम ज़िन्दगी कहता रहा जो हो सो हो

जोहदो रिया को छोड़कर उसके तलब की फ़िक्र कर

उसकी तरफ़ नज़र उठा फिर तो है क्या जो हो सो हो

★

(२९)

ख्वाजा तोरे रौजे नज़र लागी हमरी

अब तो करमवाँ कै बिगड़ी भई सुधरी

(१)

सोवत जागत रैन कटत है
इश्क़ नगर एक बिरही बसत है
आस जगाए राह तकत है
मजनूँ बना है हरदम कहत है

मन माँ मोरे ललक जागी तोहरी

ख़्वाजा तोरे ... ...

... .

(२)

भाग जगे तो काम बनत है
बिन किरपा के कौन जियत है
जग में गरीब की कौन सुनत है
ऐसी किरपा कौन करत है

सूरत तोरी ख़्वाजा दिल में मोरे उतरी

ख़्वाजा तोरे ....

.....

(३)

यह धरती ये जीवन नाता
तुम्हरे करम से सब है बिधाता
शाने अ़ता हो जैसे ख़ुदा का
तुम एक दरिया जूदो सख़ा का
नूर सरापा तुम लम यज़ली

ख़्वाजा तोरे रौजे नज़र लागी हमरी

....

....

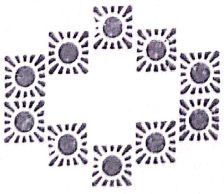

[३०]

परदे में ग़ैब ग़ैब के दिल में जमाल है
हर जा वही है और उसी का खयाल है

हर ज़र्रा कायनाते जुनूँ का निहाल है
चौखट पे उनके सिर है अजब दिल का हाल है

खुश क़िसमती से नूरे अज़ल तक पहुँच गई
वर्ना उधर नज़र भी उठे क्या मजाल है

वह बर्क़ जलवागर जो हुई तूर जल गया
उनकी तरफ नज़र भी उठाना कमाल है

वो याद बन के साथ ही रहते हैं हर घड़ी
इस ज़िन्दगी में उनको भुलाना मोहाल है

[३१]

सब पर करम है तेरा काम तेरा करम है सब पे आम
ख़्वाजये ख़्वाजगाँ सलाम हादीये बेकसाँ सलाम
रौनके दो जहाँ सलाम रहबरे आशिकाँ सलाम
ऐ मेरे दिलरुबा सलाम

(१)

मेरा सलामे जानो दिल ख़्वाजा क़ुबूल कीजिए
मेरे ग़रीब रूह को ख़्वाजा नवाज़ दीजिए
वजहे सुकूने दर्दे दिल मेरा इलाज कीजिए
मेरी दवा यही है बस ख़ुद से जुदा न कीजिए

ख़्वाजये ख़्वाजगाँ... ... ...
... ...

(२)

तेरी तलाश में है दिल अपनी मुझे ख़बर नहीं
कूचये यार के सिवा अब कोई रह गुज़र नहीं
दुनिया भरी हुई तो है लेकिन उधर नज़र नहीं
अब तो है वया तेरे सिवा इसकी मुझे ख़बर नहीं

ख़्वाजये ख़्वाजगाँ ... ...
... ...

(३)

आशिके दर्द मन्द को चाहिए आसरा तेरा
मेरी निगाह में कोई ऐसा नहीं है दूसरा
सर को झुका के बा अदब अर्ज़ है मेरी ऐ ख़ुदा
कौन सुने ग़रीब की कोई नही तेरे सिवा

सब पर करम है... ... ...

....

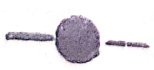

[३२]

मेरे दिल में दिलवर मेरे बनकर चाँद चमकते रहना
इस दुनिया में मेरी दुनिया तुम ख़ुश रहना जीते रहना

हरी भरी हो डाली डाली काली बदली सावन वाली
बन कर तुम इस सहने चमन में भरी बहार बरसते रहना

जाने तमन्ना मेरी ख़ातिर इतनी बात नज़र में रखना
दरिया दरिया मौजें बनकर तुम धरती पर बहते रहना

तुमसे कायम जज़्बे मुहब्बत तुमसे ज़िन्दा दिल की दुनिया
मेरे दिल के गुलशन में तुम बनकर फूल महकते रहना

सर को उन क़दमों पर रखकर एक दोआ ये माँगूगा
दर्दे मोहब्बत दिल से न जाये ऐसी किरपा करते रहना

[३२]

मेरे दिल में दिलवर मेरे बनकर चाँद चमकते रहना
इस दुनिया में मेरी दुनिया तुम ख़ुश रहना जीते रहना

हरी भरी हो डाली डाली काली बदली सावन वाली
वन कर तुम इस सहने चमन में भरी बहार बरसते रहना

जाने तमन्ना मेरी ख़ातिर इतनी बात नज़र में रखना
दरिया दरिया मौजें बनकर तुम धरती पर बहते रहना

तुमसे कायम जज़्बे मुहब्बत तुमसे ज़िन्दा दिल की दुनिया
मेरे दिल के गुलशन में तुम बनकर फूल महकते रहना

सर को उन क़दमों पर रखकर एक दोआ ये माँगूगा
दर्दे मोहब्बत दिल से न जाये ऐसी किरपा करते रहना

[३३]

अली गुसैयाँ साहब मोरे मौला जग सरदार
नूरे नबी के साथ जुड़े हैं मेरे पालनहार

गुसैयाँ धूम मची है
ये धरती झूम रही है

तुम्हरे आस पे जीवन नैया छोड़ दिया मझधार

गुसैयाँ भूल न जाना
कि नैया पार लगाना

(१)

विनती करूँ कि मौला मेरे सुनियो मेरी पुकार

कि तुम हो कुल जग के सरदार
हमारे तुम्हीं हो पालनहार

गुसैयाँ धूम··· .....
.....

(२)

अरज करूँ कि इस जग भीतर अपनी जोत दिखायो
आपन करके राख्यो मौला अपनी छाँव जियायो

कि रहमत बहुत बड़ी है
करम की आस लगी है
गुसैयाँ धूम.....

(३)

मोरी करनी धरनी का है तुम जानो सरकार

कि तुम हो कुल जग के सरदार

हमारे तुम्हीं हो पालनहार

गुसैंयाँ तुम … … … … … … …

… … … … … … … … … …

●★●

[३४]

या तो ये ज़िन्दगी सही या तो वो ज़िन्दगी सही

दोनों के बीच आज तक रस्मे वफा नहीं जिई

होने की बात तो सही दुनिया में न्यामतें हजार

मुझको तो लज़्ज़ते हयात उनकी नज़र से ही मिली

या रब अ.ता जो कीजिए तो बस वही ग़मे जुनूँ

एक यही तो ज़िन्दगी दुनिया में काम की लगी

क़ैदे क़फ़स से ता चमन ज़िन्दगी अपनी ये रही

उनकी ही याद में कटी उनके ही ग़म में जी गई

[३५]

फूलै फूल तो रतिया महके हो गुलशन गुलज़ार
नगरिया ख़्वाजा जी की दिल का चैन क़रार
कहूं मैं अपने जी की
ख़्वाजा सुनो पुकार
कि हमरे बालापन से तुमहिन एक हमार
ख़्वाजा सुनो पुकार

(१)

सुधिया हमरी राख्यो ख़्वाजा
हमरा जीउ जियायो ख़्वाजा
हमरा भाग जगायो ख़्वाजा
तुम्हरी किरपा पाये
गुलमवाँ तुमहिन पर इतराये
कि हमरे बालापन से ....
ख़्वाजा सुनो... ... ...

(२)

का जानूँ ई मन की माया
जागा भाग तमाशे आया
देख के नूरी निर्मल काया
तुमको अपना ख़ुदा बनाया
तुम्हरी किरपा पाये
....
.....
ख़्वाजा सुनो... ... ...

[३६]

कजरा निहारैं सब मोर गवन मोरा काहे ना लीना

[१]

मोरे दरदिया की बात न जानैं
हँसि हँसि देखैं ताने मारैं
नजर मोरी सइयाँ तुम्हरिन ओर
गवन मोरा काहे ... ...
कजरा निहारैं सब मोर

[२]

बीती सो बीती जो गुजरी गुजर गई
प्रितिया तो मनवाँ में ऐसी उतर गई
हमका न भूलैं चितचोर
नजर मोरी सइयाँ तुम्हरिन ओर
गवन मोरा... ... ...
.....

[३]

तुम्हरो लगनियाँ सहारा दिये है
ई जियरा तुमहीं सहारे जिये है
मोहन तनी चितवौ हमरिन ओर
कजरा निहारैं... ... .
गवन मोरा ... ...

[३७]

मनवाँ मा मोरे बिराजै हमार पिया

हमका बहुत नीक लागै हमार पिया

घरवा अटरिया दुअरिया बिराजै

दमकै नगिनवां अँगनवां सुहावै

मोरा जियरा जियावै

~~जोबन आपन दिखावै~~ हमार पिया

हमका बहुत ... ...

सँवरिया सुरतिया हो हरवा गरेका

छले आप आपी जियरवा करे का

नयना से जादू चलावै हमार पिया

हमका बहुत ....

बंसी की लय पे सहाना बजावै

जियरा जिये की रहिया दिखावै

रंगीली चदरिया ओढ़ावै हमार पिया

हमका बहुत . ...

★

[३८]

मोर चुँदरिया रँग देव ऐसी हे बालम रँगरेज

पियरवा मोरा गले लगावै
सेजरिया सुख की नींद सुलावै
जनमवाँ मोर सुफल होइ जाय
मोर ... .

(१)

कजरा ऐसा मोर सोहावै
धरती झूमै गगना गावै
पत्ती – पत्ती ताल बजावै
कि मनवाँ लहर लहर लहराय
जनमवाँ मोर सुफल हो जाय

(२)

बारौं ऐसी दियना बाती
जाकी जोत सरगपुर जाती
मालिन ऐसा हार बनाती
कि महर – महर महकाय
जनमवाँ ... ...

(३)

जब से लाग लगनियाँ लागी
अँखियन नींद न रतिया लागी
विरहिन पी की याद में जागी
बस पी पी रटन लगाय
जनमवाँ ... ...

[३९]

वक़्त कभी मिले अगर मेरी तरफ भी आइये
जाने हया ये अर्ज है अपनी कहा निभाइये

दिल को सुकूने हासिले ज़िन्दगी दिखाइये
यानी क़रीबे ज़िन्दगी और ज़रा आ जाइये

एक वही तो ज़िन्दगी जिसपे करम हो आपका
ऐसा करम ज़रा कभी जाने हया दिखाइये

घटा उठी बरस पड़ी फिर दरे मैकदा खुला
मैकशी अब ज़रूर हो जाइये दौड़ जाइये

रंगे जुनूँ चमन में कुछ इस तर ह जमाइये
अपने सिवाय और कुछ फिर न कभी दिखाइये

-★-

[४०]

जोबनवाँ आपन हम तजि दीन
अलख जगायों नाम निरंजन

आठ पहर हम लीन
सुध बिसरी संसार भुलाना

ऐसी मधुवा पीन
जोबनवाँ आपन ....

(१)

ब्याह कियो गवन नहिं ल्यायो
रहिया तक्यों निरमोही न आयो
प्रीत तो मनवाँ भूलाई न पायो
ऐसी किये हो तो काहे रिझायो

कौन खता हम कीन
जोबनवाँ.....

(२)

उन ही सहारे निस दिन जीयत
अंसुवन मोती हार पिरोवत
ऐसे बसे हैं चित से न उतरत
सब ही भली होइ का हो सोंचत

जो बिधना लिख दीन
जोबनवाँ आपन.....

★

[४१]

मोहब्बत देख लेना इस तरह तुमसे जुड़ी होगी
तुम्हारे हर इशारे पर मेरी गर्दन झुकी होगी

वही दुनियाँ ही में इक ज़िन्दगी बस ज़िन्दगी होगी
निगाहे नाज़ जिसके जानो तन में चुभ गई होगी

मुकम्मल दास्तानें ज़िन्दगी उस दिन वही होगी
कि उस चौखट पे अपनी सांस जिस दिन आखरी होगी

कि दीवाने ने जो कुछ आइने में देख ली होगी
वही तक़दीर बनकर इश्क़ से लिपटी रही होगी

तमन्ना देखने जिस दम सरे महफ़िल चली होगी
तो क्या देखेगी उनको देखती ही रह गई होगी!

सबा लेकर चमन में उनकी ख़ुशबू जब गई होगी
तो दीवानों ने उनके हाथ दुनियाँ बेंच दी होगी

[४२]

तुम राजा हो इस नगरी के तुम्हरी दिया दुहाई
तुम महराज बड़े दाता हो तुम्हरे हाथ खुदाई

कश्ती पड़ी भंवर या ख़्वाजा
रहमत भरी नज़र या ख़्वाजा

(१)

हे ख़्वाजा तुम दर्द दिलों का पल में दूर करे हो
ज़िन्दा रक्खे रहम तुम्हारा तुम या ख़्वाजा बहुत बड़े हो

कश्ती पड़ी.....
रहमत भरी.....
तुम राजा हो.....

(२)

रहमत भरी बदरिया हो तुम अपनी शान दिखावो
आस लिये आया है मँगता दिल का दर्द मिटावो

कश्ती पड़ी भंवर या ख़्वाजा
रहमत भरी नज़र या ख़्वाजा
तुम राजा हो.....

[३]

पाक तुम्हारा दामन हाथ आजाये तो कहना क्या है
एक इशारा दिल की जानिब हो जाये तो कहना क्या है

कश्ती पड़ी भंवर या.....
रहमत.....
.....

[४३]

पिया पिया रटना करे पिया के पियरवा
रतिया बोले ला पपिहरा

जियरा छीने ला पपिहरा
जदुवा डारे ला पपिहरा

(१)

रतिया जागे सोवे नाहीं ऐसी भाग लिखनियाँ
दुनिया सोवे प्रेमी जागे पी पी करे रटनियां

रतिया बोले ला पपिहरा
जियरा ... ...

(२)

पी पी कहके ब्याकुल मनवां बोले ऐसी बोलिया
आग लगे सीने के अन्दर हिल जाले रे छतिया

रतिया बोले ला पपिहरा
जियरा छीने ला पपिहरा
जदुवा डारे ला पपिहरा

पिया ... ...
रतिया बोले ला ... ...

[४४]

ज़िन्दगी उनका ठिकाना पा गई

गर्मिये दिल काम अपने आ गई
ये ग़रीबी दिल की उनको भा गई
वो नज़र ऐसा करम फ़रमा गई
अब मोहब्बत ज़िन्दगी पर छा गई
ज़िन्दगी उनका ... ...

सूरते जानाँ मुझे काबा लगे
जानो तन बनकर दिलो जाँ में रहे
हर घड़ी नज़रों में वो सूरत फिरे
चाहता है दिल कि बस देखा करे
वो अदा कुछ दिल को ऐसी भा गई
ज़िन्दगी उनका ... ...

तुम ही हो वजहे सकूने दिल मेरे
मैं मुसाफिर हूँ हो तुम मन्ज़िल मेरे
मैं हूँ कश्ती और तुम साहिल मेरे
तुम मसीहा भी हो और क़ातिल मेरे
ज़िन्दगी अपनी हक़ीक़त पा गई
ज़िन्दगी उनका ... ...

★

[४५]

पिया मोहे बेगुन बनी मत छोड़्यो

(१)

तुम्हरी बनी हूँ तो तुम्हरी कहाऊँ
अपने किये की लाज निभाऊँ

हर दम एकै पुकार
पिया मोहे बेगुन बनी ... ...

(२)

नजरे करम हो मौला अ़ली जी
मदद की है बेरिया देरिया लगी जी

दया कीजिए सरकार
हरदम एकै पुकार
पिया मोहें ... ...

(३)

चुनरी चटक रंग ऐसी रँगायो
अपनी झलकिया ऐसी दिखायो

कि झूमे सारी बजार
हरदम एकै पुकार
पिया मोहें ... ...

[४६]

बल ग़लउला ब कमाले ही
कशफ़द्दोजा ब जमाले ही
हसुनतजमी ओ ख़िसाले ही
सल्लू अलैहे ब आले ही
(शेख़ सादी)

(१)

कोई मुझसे पूछे तो मैं कहूँ कि वो दिल को मेरे भला लगे
मेरे साथ रहता है हर घड़ी के वो एक पल न जुदा लगे
मेरे साथ है मेरे पास है मेरे दिल में मुझको बसा लगे
कोई मुझसे पूछे तो मैं कहूँ कि वो मुझको मेरा ख़ुदा लगे
बल ग़लउला ब कमाले ही
... ...

(२)

कोई और ज़िन्दा मिला नहीं वही एक बस वो ख़ुदा मिला
कि वो नूर सारे जहान में वही आसमाँ में छुपा मिला
वही एक जिससे तमामतर ये ज़हूरे ज़ाते ख़ुदा मिला
ये ख़ुदाई जिसपे निसार है वही मेरी जाँ में घुला मिला
बल ग़लउला ... ...
... ...

(३)

यही आरज़ू मेरे दिल की है कि ज़ुबाँ पे नाम सदा रहे
यही इश्क़ हो मेरी आबरू यही दर्द दिल में बना रहे
मै कभी न उससे जुदा रहूँ न कभी वो मुझसे जुदा रहे
कि जो मौत आवे तो उस घड़ी मेरे साथ मेरा ख़ुदा रहे
बल ग़लउला ब कमाले ही
... ...

[४७]

मनवाँ डोले तनवाँ डोले डोले कुल संसार हो
दुनिया देखे मस्ताने को नाचे बीच बजार हो

[१]

छैला मेरा मेरे आँगन देखो आया आ हा हा
हुस्न सरापा भाया मन को मन को भाया आ हा हा
जलवा नूरी नूरी जलवा हरसू छाया आ हा हा
सूरत सूरत अल्लाह वाली अल्लह आया आ हा हा

मनवाँ डोले तनवाँ .....
... ...

[२]

कैसी देख वो सूरत भोली मन बौराया आ हा हा
बिजली चमकी बादल गरजा दिल लहराया आ हा हा
बाँध पगड़िया बन्ना आया बन्ना आया आ हा हा
एक तजल्ली ऐसी फिर कुछ और न भाया आ हा हा

मनवाँ डोले तनवाँ... ... ...
... ...

-★-

[४८]

एक तसवीरे दिल हम बनाकर उसमें रंगे वफ़ा जब भरेंगे
दम सलामत रहे आशिक़ी का सारी दुनियाँ को हैराँ करेंगे

हमको कुछ भी नहीं फिक्र इसकी दैरो काबा हमें क्या कहेंगे
नाम लेकर जियेंगे तुम्हारा नाम लेकर तुम्हारा मरेंगे

तुम सहारा हमारा बनोगे हम तुम्हारे सहारे जियेंगे
और इसके सिवा चाहिए क्या और कुछ चाहकर क्या करेंगे

ये वही इश्क़ है जिसकी ख़ातिर हमने सोंचा है जब तक जियेंगे
उसको दिल में बसायेंगे अपने उसकी दुनिया ही में अब रहेंगे

कौन जाता है अब मैकदे से मैकदे ही में अब तो रहेंगे
रखके जामों सुराही बग़ल में जानिबे यार देखा करेंगे

[४९]

इतनी है इल्तिजाये मोहब्बत तुम न नज़रों से अपनी गिराना
दिल को आबाद रखना हमेशा इस मोहब्बत को जिन्दा बनाना

ये लगी दिल की ही जिन्दगी है जिन्दगी जिन्दगी को बनाना
मिटने वाली निशानी न देना ये करम ख़ास अपना दिखाना

रिन्द दिल से दोआ तुमको देंगे तुम शराबे मुहब्बत पिलाना
मैंकशी आबरू है हमारी मैंकदे ही में हमको जिलाना

जानो तन काम आये तुम्हारे मुझको अपने लिये ही जिलाना
इश्क़ अपनी बुलन्दी पे पहुँचे तुम हमेशा यूँ ही मुस्कुराना

हम भिकारी दरे मैंकदा के मैंकदा ही हमारा ठिकाना
हमको परवा नहीं है किसी की कुछ भी कहता रहे अब ज़माना

●★●

[५०]

ऐ ख़्वाजये कौनो मकाँ ऐ फूल गुलशने पञ्जतन
तुम पर निछावर जानों दिल तुम पर तसद्दुक जानों तन

(१)

मेरी तरफ भी देखिए ऐ ख़्वाजये हर दो सरा
मौला मेरे मुशकिल कुशा आक़ा हो हर दुख की दवा
इस रूह को मन्ज़िल मिले यह रूह हो महवे बक़ा
सरकार ज़ख़्मी है हिरन दीजै कोई अच्छी दवा
ऐ ख़्वाजये.....

(२)

जोशे जुनूँ को गर्मिये सहबा अता फरमाइये
पैदा तजल्ली हो कोई इस रूह को गरमाइये
ख़ाके दरे मैख़ाना को मस्ती अता फरमाइये
सूनी पड़ी है अन्जुमन इस रूह को गरमाइये
ऐ ख़्वाजये.....

(३)

सरकार तुमसा तो सख़ी होगा नहीं ऐसा कहीं
ऐसा करम ऐसा रहम हमने कहीं देखा नहीं
ऐसी दया ऐसा धरम करता कोई मिलता नहीं
हमसे ग़ुलामो पर दया बख़्शिश अता क्या क्या नहीं
ऐ ख़्वाजये.....

[५१]

दिल में अली नज़र में अली जाने जाँ अली
मुरशिद अली मुराद अली बासफ़ा अली
मेरे हज़ार रंजो अलम की दवा अली
कीजे मदद ऐ मस्त अली बाख़ुदा अली

(१)

दुनियाँ में हरेक लुत्फ़ो करम की बिना अली
आले नबी है उनसे जुड़ी हक़ नुमा अली
हर मरदे हक़ परस्त के दिल में है या अली
कीजे मदद ऐ मस्त अली.....

(२)

रौनक वही है जिसपे अली की नज़र रहे
साया अली का जिसपे है वह बाख़बर रहे
शाने ख़ुदा हैं नूरे नबी से जुड़े अली
कीजे मदद ऐ.....

[३]

नारा अली का दिल से उठा मस्त जी उठे
कौसर के जाम होंठ से मस्तों के आ लगे
फिरते हैं मस्त झूम के कहते हैं या अली
कीजे मदद .....

[५२]

जब जिकरे अलख जगाता हूँ
वो सुरत देख खो जाता हूँ
मैं नूरी तन पा जाता हूँ
मैं नूरे नबी कहलाता हूँ
फिर देख फ़रिश्ता सिजदा करे
मोहे साधू सुरिता सूझ पड़े
नारैन हरे नारैन हरे

(१)

जब दिल के अन्दर रूह जगे
वह अलख निरन्जन सूझ पड़े
हर ज़र्रये दिल एक तार बने
हर तार यही झनकार करे
वो यार मेरा जानो जिगरे
मोहे साधू ... ...
नारैन हरे ... ...

(२)

एक नूर ही कुल संसार जगे
वो शाने सिफ़त रंगीं असरे
उस जानिब दिल सीने से खिचे
जब अर्शे बरीं पहुँचे तो कहे
दिल क्यूँकर उसके बग़ैर जिये
मोहे साधू ... ...
नारैन हरे ... ...

(३)

जब काबये दिल में झलक पड़े
जब नूर नबी का चमक पड़े
जब सीने अन्दर दमक पड़े
तो उसको ख़ुदा क्यों कर न कहे

मोहे साधू सुरिता ... ...

.. ..

[५३]

हमारा दिल कहीं भरता नहीं हम क्या करें बोलो

तुम्हारे बिन कहीं लगता नहीं हम क्या करें बोलो

तमन्ना ख़ाक बन जाने की है अब लाज रख लेना

कि बिन इसके सनम मिलता नहीं हम क्या करें बोलो

ये तस्वीरे मोहब्बत जाने क्या-क्या खोके बनती है

ये घर बिन ख़ूँ दिये बसता नहीं हम क्या करें बोलो

वो मस्ती बन के आये हैं तो कैसे लौट जाने दूँ

ये नग़मा बारहा छिड़ता नहीं हम क्या करें बोलो

[५४]

भुखिया न लागै पियसिया न लागै
मोहिया लागै हो

तोहरी देखिके सुरतिया
मोहिया लागै हो

(१)

मँगिया भरी है सेंदुर की रेखा,
बाँधे है हाथों में कँगना सोहाग ।
जोड़ा मिला हरियाले बना से,
मधुवा पियत ऐसे जागे भाग ।
भुखिया न लागै ... ...
मोहिया ... ...
तोहरी ... ... सुरतिया
मोहिया ... ... हो

(२)

राधा के दिल में कन्हइया बसे हैं,
चकई के दिल में चकोर ।
पिया पिया रटत पपीहा भइ हूँ,
हाय रे हाय बलम चितचोर ।
भुखिया न लागै ... ...

(३)

नदिया की धारा में जीवन की नइया,
जीवन की नइया में बैठा खेवइया।
सपनों के रंगों में मन के बसइया,
मन के बसइया हैं ऐसे लगइया।
कि मोहिया लागै हो
भुखिया न लागै ... ...
कि मोहिया लागै हो।

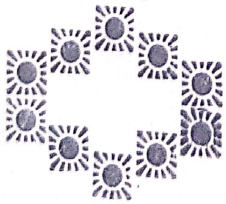

[५५]

साथे राख्यौ हो मोर सजना अपनेन साथ जिआयो
प्रेम अगनियां सगरो लागी मधुबन मोर जरायो

मन प्यासे की आस बड़ी है बदरा बन छा जान्यों
अबका और कही तुम जानों घरवा मोर बसायो

आस बड़ी महराज तुम्हारी चाँद सुरज बन आयो
नदिया नारा खोही खोहा आंधर समझ डकायो

साथे राख्यौ ... ...

धरती पे आकाश बिराजे मनई रूप निहार्‌यो
कंगना हाथ वही से बांध्यो जासे मन पतियायो

प्रेम कहानी सुनो रे भाई एक में एक समायो
इन् हिन से सब रिश्ता नाता इन् हिन से बतलायो

साथे राख्यौ ... ...

★

[५६]

संदेसा मोरे बलमा से कहियो जाय
अकेली मैं ना झूलूँगी महराजा

(१)

मोरे दिल चैन तुम्हें आना पड़ेगा
घिरे - घिरे बदरा बरसाना पड़ेगा
आग लगी मन की बुझाना पड़ेगा
अंग - अंग बनके रंग छाना पड़ेगा

अकेली मैं ना ... ...

(२)

तुम्हें पाये चैन मिले दुःख सुख भूले
बेल - बेल पात - पात फूल नया फूले
तुम ऐसी कौन करे श्याम चतुराई
मोरी सुध तुम्हें छोड़ और किसे आई

अकेली मैं ना ... ...

[५७]

चंदन बन में गिरे रस की फुवार हो
आज पिया बालम घर मोरे आये

(१)

संदल सुहाग आया डाल बरी आई
बेले का गजरा मालिन लाई
माथे की बिन्दियाँ सुरमा सलाई
भोरवां नैन मिले सझवां सगाई
झुर झुर बहैले पुर्वा बयार हो

आज पिया बालम… … … …
चंदन बन में… …. … … …

(२)

रंगे मोहब्बत आकाश पहुँचा
मौजों में गंगा की तारा चमका
अमवां बौरे मधुबन महका
साग़र खनके शरावी बहका
राम सुनी आज मोरे मन की पुकार हो

चंदन बन में…. … … … ….

दुनिया से क्या कहना सुनना इससे मत कुछ कहा करो
राम भरोसे रहने वालो राम भरोसे रहा करो

मन से कहना भटक न जाये दिल से कहना जला करो
एक दिन साजन मिल जायेंगे सैंयाँ सैंयाँ रटा करो

देखत देखत मिटे अँधेरा राम रूप की जोत जगे
तुमको बस हम देख सकें तुम ऐसी किरपा किया करो

एक तजल्ली एक तमाशा एक की पूजा एक से नाता
ध्यान धरो गुरु मूरत अन्दर मन की माला जपा करो

बे मस्ती के हस्ती क्या है साजन बिना ये बस्ती क्या है
मस्त बनो तो फिर हर लमहा साथ सजन के रहा करो

[५९]

मैं क्या मेरी ख़ाक भी इक दिन उस कूचे में जायेगी,
मुझको क्या रोकेगी दुनिया मुझको क्या समझायेगी ।।

जब देखी मैंने वह चितवन दिल के अन्दर बात उठी,
अब ये मुझे दीवाना करके गली गली फिरवायेगी ।।

मेरी जान की क़ीमत क्या गर उसके ख़ातिर जायेगी,
तो मिट्टी बरबाद न होगी कुछ तो काम आ जायेगी ।।

एक तजल्ली एक नज़ारा एक तसव्वुर एक सहारा,
दिलवर मेरा साथ है मेरे दुनिया क्या भुलवायेगी ।।

एक तमन्ना मेरी ऐसी जिसपे निछावर सारी दुनिया,
अब दुनिया क्या नज़र में मेरी कोई कीमत पायेगी ।।

सुनो सुनो ये हिकायते दिल
वो मेरी हस्ती मिटा के माना

(१)

तमाम रातें जगा के माना
बिरह की अग्नी लगा के माना
जिगर को जिन्दा जलाके माना
तजल्ली अपनी दिखाके माना
बना वह मेरा कुछ इस तरह से
की मुझको अपना बनाके माना
सुनो.....

(२)

चमन खिला है बहार फूली
चमन में बुलबुल चहक के बोली
अलम् मोहब्बत तमाम भूली
जो चाहा उसने वो होनी हो ली
उठा के परदा गिराके बिजली
वो जलवा अपना दिखा के माना ।

(३)

अज़ाब कैसा सवाब क्या है
करम का उसके हिसाब क्या है
वो मस्त जिसका जवाब क्या है
के उसके आगे किताब क्या है
हज़ार चाहा न तौबा टूटे
मगर वो साग़र पिला के माना ।

(४)

वो आया आलम पनाह बनकर
जहाने दिल की निबाह बनकर

वफ़ा की दुनियाँ संवारने को
निगाहे मजनूं में चाह बनकर

हरेक सूरत में खुद वही था
जो मेरी सूरत मिटा के माना

सुनो सुनो ये हिकायते दिल.....

.....

[६१]

तुम हो साजन मेरी दुनिया
मेरी दुनिया तुमने बसाई

सब जग रूठे तुम मत रूठियो
तुम रूठियो तो गजब होई जाई

(१)

रंग सलौना सांवरिया का मतवारे नैना चमके हैं
एक कशिश मोहक बेताबी दिल अन्दर सीने से खींचे हैं
नन्दलला की बलैयां लेने कितने गोपिन नैन जुड़े हैं
माखन-चोर से बिनती करे को कितने सखा कर जोड़े खड़े हैं
तुम हो साजन ... ...

(२)

आँसू ढरे कजरा बह निकले वियोग की आग में प्रीत जरी है
पाँव पड़ी जंजीर के पत्थर ऊपर गहरी लकीर पड़ी है
चाह तुम्हारी भुलाए न भूली प्रीत कभी न मिटाये मिटी है
जाने जहान हमारे दुलारे ये जान तुम्हारे ही हाथों बिकी है
तुम हो साजन ....

(३)

तुमने सुने दुःख बैन हमारे हमने तो तुमसे कहानी कही है
साँची कहो मनमोहन हमारे तुम्हें दिल भीतर कैसी लगी है
जैसी कटी है तुम्हारे लिए थी जो भी रही हो तुम्हारी रही है
तुमने बनाई बनाई बनी सो हमारे बनाये तो कुछ ना बनी है
तुम हो साजन ... ...

★

हमका नचाओ श्याम
जैसे जीया चाहे

बन्सी बजाओ श्याम
जैसे जीया चाहे

(१)

सुध नाहीं बिसरे कसक नाहीं निसरे
मनवाँ कतौं जाये तुमसे न बिछड़े
तुम्हरी सुरतिया चित से ना उतरे
अखियाँ हर दम तुमका चितवै
हमका नचाओ श्याम ... ...

(२)

घर तुमसे आबाद हुआ है
घर तुमसे आबाद रहेगा
दिल की ठंडक मन उजियारा
सोवत जागत याद रहेगा
हमका नचाओ श्याम ... ...

(३)

मैं का जानूँ कवन रंग साजै
तुम्हार मन चाही सलोनी लागै
तुम्हरी रंगी भई झम झम बाजै
अब का शरम रही अब कौन लाजै
हमका नचाओ श्याम ... ...

[६३]

अब न तड़पाओ ब्याकुल जिया
मोरे बाँके छबीले पिया

तुमसे मिलने को तरसूँ पिया

(१)

तुम हो ज़िन्दा तो ज़िन्दा हैं हम
तुम नहीं हो तो हम भी नहीं
तुमसे है ज़िन्दगी का भरम
और दुनिया में कुछ भी नहीं

तुमको मैं देखकर जी गया
मोरे बाँके छबीले पिया
तुमसे मिलने को तरसे जिया

(२)

बे सहारा न छोड़ो धनी
ज़िन्दगी बिन तुम्हारे नहीं
तुम नहीं हो तो कुछ भी नहीं
रात लहरा के नागिन बनी

अब न तड़पाओ ब्याकुल जिया
तुमसे मिलने को तरसूँ पिया

(३)

लेके पैग़ाम जाना सबा

उनसे कहना कि जाने हया

कैसे निकले जो दिल में बसा

तुमको कैसे कोई भूलता

ए पिया बात सम्झो ज़रा

अब न... ... ...

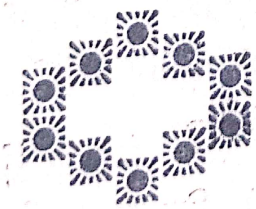

[६४]

ख़्वाजा के द्वारे कंचन मोती
बदरा रिम झिम बरसे राम

(१)

शाख़ पै चिड़ियाँ झुरमुट बांधे गावें राग सुरीले
भीतर मन अमृत टपकावै अनहद बोल रसीले
राम की माया रंग बिरंगी सत रंगों के मेले
प्यासे नैना एक टक चितवैं साजन ऐसे छैल छबीले
ख़्वाजा के द्वारे ... ...

(२)

ज़ात ख़ुदा की बक़ा में देखो समझो क्या समझाती है
इश्क़ का जलवा ख़ास जो हो तो रूह अमर हो जाती है
सिफ़त सिफ़त से जुड़ी हुई है नागिन सी बल खाती है
वो ख़ुद ही हो जलवागर तो बिजली सी लहेराती है
ख़्वाजा के द्वारे ... ...

(३)

शीशा सागर जाम सुराही भरने वाला ख़्वाजा मेरा
एक नज़र में ज़िन्दा दिल को करने वाला ख़्वाजा मेरा
मुझको नाज़ की मेरी दुनिया बसी हुई है उसके दम से
इस दुनिया में हम को ज़िन्दा रखने वाला ख़्वाजा मेरा
ख़्वाजा के द्वारे ... ...

[६५]

हे पन्जतनी पाक इमाम कुकुर हूँ मैं तुम्हरे दर का
तुम पर लाखों बार सलाम

(१)

दुनिया ऐसी जैसी दुनिया
नीली पीली काली दुनिया
इस दुनिया में कहा क़याम
तुम रक्खो तो रहूँ इमाम
तुम पर लाखों बार सलाम
... ...

(२)

तुम नूरी तन मैं एक छाया
तुम परभू धन ज़ात की माया
सारी दुनिया तुम्हरे नाम
मैं क्या मैं तो एक ग़ुलाम
तुम पर लाखों बार सलाम
... ...

(३)

माला जपूँ न मनका फेरूँ
तुम्हरी नेक नजरिया हेरूँ
बस इस एक नजर से काम
ऐ दिल आ वह दामन थाम
तुम पर लाखों बार सलाम
... ...

(४)

मेरे हसन हुसैनी आक़ा
है जग सरवर तुमसे नाता
तुम्हरा दिया ये कूकुर खाता
पालन हारी तुम्हरे नाम
तुम पर लाखों ... ...
... ...

(६६)

अब ना पहिरब लाल चुंदरिया
लोगवा नजर लगावें ना

(१)

बाली उमरिया भरी जवानी देख के मन ललचाये
रस की गगरी छलकत जाये कैसे कोई छुपाये
अब ना पहिरब··· ··· ··· ·····

(२)

खुशबू फैली मस्ती वाली सगरो जग बौराये
तोहरी गुजरिया चली बजरिया मन ही मन शरमाये
लोगवा नजर··· ··· ··· ··· ···

(३)

अल्लाह हू की ज़रकारी में गोटा लगा चमकने वाला
हैराँ होकर रह जाता है सूरते इन्साँ तकने वाला
लोगवा नजर··· ··· ··· ··· ···

(४)

अमवाँ बैठी कोयल कूकी देख के बदरा काले
सुलगत मन में आग लगावे दर्द को और बढ़ावे
घरवा सास ननदिया छेड़ें ताना मारें कस कें
पापी दुनिया हँस के पूछे साजन तुम्हरे कैसे
लोगवा नजर··· ··· ··· ··· ···
अब ना··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

★

सनम परस्ती में उनको सजदा नहीं करोगे तो क्या करोगे
वफ़ा के बन्दे जो इश्क में तुम नहीं बनोगे तो क्या करोगे

ये बुत कदा है यहाँ का मज़हब परस्तिशे बुत सिवाय क्या है
उसी के होकर उसी के बनकर नहीं रहोगे तो क्या करोगे

अजीब हैं दिलबरी की बातें ये जानो दिल सब उन्हीं पे सदक़े
यही तो है काम आशिक़ी में नहीं करोगे तो क्या करोगे

वही तजल्ली है एक जिससे तमाम ज़िन्दा हैं आरज़ूएँ
जो उसके क़दमों की ख़ाक मुँह पर नहीं मलोगे तो क्या करोगे

हमें तो मतलब शराब से है जो मस्त कर दे ख़राब कर दे
ये जाना हमने कि रिन्द बनकर नहीं पियोगे तो क्या करोगे

[६८]

दम हे ख़्वाजा मुझको दम दो
देखो मेरा हाल ग़रीबी
ज़िन्दा करदो मुझको ख़्वाजा
इस जीवन में जीवन भर दो

(१)

तुम इक फूल कि जिसकी ख़ुशबू से ये चमन महकता है
तुम इक सूरज रहमों करम के तुमसे रहम बरसता है
सूखा जीवन हरा करे हो तुमसे चमन संवरता है
खाली झोली लेकर कोई इस दर से कब फिरता है
दम हे ख़्वाजा... ... ...

(२)

तुम्हरे जैसी आन बान से ख़्वाजा है दुनिया खाली
सूरज और बहुत से उभरे लेकिन मिली न ये लाली
ज़िक्र तुम्हारा हर बस्ती में शान बड़ी रहमत वाली
ऐसा मंगता नहीं है कोई जिसपर तुमने नज़र न डाली
दम हे ख़्वाजा... ... ...

(३)

तुम्हरे रहते कैसे कोई पेड़ रहेगा सूखा ख़्वाजा
तुमने पाल बढ़ाया जग को कितने चाव से रक्खा ख़्वाजा
ज़हर बना अमृत की धारा दुखिया ने सुख चक्खा ख़्वाजा
इतनी परवा करने वाला कोई नहीं है तुमसा ख़्वाजा
दम हे ख़्वाजा... ... ...

★

[६९]

मुझको इश्क़ नचाता है या मस्त क़लन्दर

अली अली दम - दम के अन्दर
तक तक थैया - थैया हो

(१)

सुनो ये बंसी मीठे सुर में कैसे बोल सुनाती है
दिल का दर्द बढ़ा देती है चाक जिगर कर जाती है
सौदाई दीवाना करके गली गली फिरवाती है
आग लगा देती है दिल में सोई याद जगाती है
मुझको इश्क़ नचाता है··· ··· ··· ···
.....

(२)

इश्क़ खड़ा है लेकर प्याला जो पी ले सौदाई हो
बात न फिर दुनिया की माने मस्त बड़ा शैदाई हो
समझ न पाये कोई उसने कैसे लाज गँवाई हो
दिल के अन्दर जो है उसने हालत अजब बनाई हो
मुझको इश्क़ नचाता है··· ··· ··· ····
.....

(३)

क़दम क़दम पर याद में उसकी दिल में मस्ती आती है

ये मैख़ाने अन्दर वाली बहुत ग़ज़ब ढा जाती है

रस की भरी बदरिया आकर बूँद बूँद बरसाती है

यार मेरा वो यार कि जिसकी यारी मस्त बनाती है

.....

[७०]

दिल के अन्दर दिलबर जानी
मछली मछली कितना पानी
जितना डूबो उतना पानी

(१)

डूब गया तन मन धन सारा
छाया मिटी तो उभरी काया
काया अन्दर राम की माया
माया जुड़ी तो दिल गरमाया
दिल के अन्दर··· ··· ··· ··· ···

(२)

रंग सुनहरा रोशन आला
चमक रहा है अल्लह ताला
अल्लह जानी की इक मूरत
समा गई आँखो में सूरत
दिल के अन्दर··· ··· ··· ··· ···

(३)

तेरा रंग-ऐ हुस्न निराला
तेरी ख़ातिर जीने वाला
सदा रहा तेरा मतवाला
टूटी चाह न छूटा प्याला
दिल के अन्दर··· ··· ··· ··· ···

★

[७१]

मोरे लखिया बाबुल ख्वाजा
तुम्हरी ओरियाँ रोज़ निहारूँ

तुमहिन पालन हार
ख़्वाजा मोरी सुनो पुकार

(१)

भागन मोरी भाग मे लिख देव
उजरी उजर तन चुनरी कइ देव
कइ देव मन उजियार
चुनरी लाज हमार

मोरे लखिया··· ··· ··· ··· ·····

(२)

सदक़ये आले पाक बटत है
हमसे गरीब की बिपदा कटत है
बिपदा कटे सरकार
तुम्हरी किरपा अपरम्पार

मोरे लखिया··· ··· ··· ··· ·····

(३)

अल्लह रूप में अल्लह होई
जान सकत है बिरलै कोई
बिरलै मोर करतार
सिजदा करूँ सरकार

मोरे लखिया··· ··· ··· ··· .....

(४)

ज़ाने वफ़ा हो रूही फ़िदा हो
दर्दे जिगर की मेरे दवा हो
दर्दे जिगर के यार
मेरी दवा हो सरकार

मोरे लखिया··· ··· ··· ··· .....

(७२)

हे सजनी हे सजनी हे सजनी आओ
घूम घूम आरती उतारें बलम की

(१)

रीझ गई मैं तो अपने पिया पर
बैठ गई बात यह अब तो जिया पर
बे हुए उनकी दीवानी बने ना
बिन तुम्हरे बालम जीवन कटे ना
हे सजनी हे सजनी… …. …. …

(२)

नैन मूंद देखा दिल के बीच पाया
झाड़ू बहारू किया पलंगा बिछाया
हाथ जोड़े खड़ी रही सेजिया पे आया
जोड़ लिया जनम गांठ साजन बनाया
हे सजनी हे सजनी… …. …. …
झूम झूम… … … … … … … …

(३)

हाथ बांध आई मैं अली जिउ के द्वारे
हे नाथ नारायन हे परान प्यारे
हे जीवन दाता बाँके बिहारी
मेरी जान सदके मैं तुम पे वारी
आओ चलो आरती उतारें बलम की
झूम झूम… … … … … … … …

[७३]

नियरे हो बालम और तनि नियरे

(१)

जाने जहां मुझ में बसो रोम रोम घेरो
लहर उठे साँस साँस अल्लाहू छेड़ो
तुमसा रंग रूप मिले ऐसा रंग फेरो
अब जो बसो दूर तो ये जान मेरी ले लो

नियरे हो बालम··· ··· ··· ··· ····

(२)

प्रेम-रस धार बही गंगाजल छलके
गोरी लिए गागर चली पतली कमर लचके
राह देख जिया डरे सैय्यां को बुलावे
देखो कहीं बैठ जाय हिम्मत न हारे

नियरे हो बालम··· ··· ··· ··· ·····

(३)

शम्मा साथ परवाना चाह बड़ी गहरी
सूरत जो दिल में बसी चित्त से न उतरी
रुह साथ चाह जुड़ि रूह से न बिछड़ी
चाह की ही चाह रही चढ़के न उतरी

नियरे हो बालम··· ··· ··· ··· ·····

रंगाय लेव चुनरी अरे मोरी धनिया
नाहीं तो ढल जाइ नमकीन पनिया
रंगवा चमक चढ़ी जबले बाय जवनिया
रंगाय लेव चुनरी अरे मोरी धनिया

(१)

ख़्वाजा जी रंगावें क़ुतुब पिया पहिरैं
गंज शकर मगन भये गगन बीच लहरैं
निज़ाम पिया सोना रूप पिया रूप लीना
जग उजियार सब रूप पिया कीना
रंगाय लेव चुनरी ... ...

(२)

चुन्दर मां मोती टके नौ लखिया
देवतन की देखे धड़कै छतिया
इतरा गुलाब की भीनी महकिया
पिया मन भावे नीकी सुरतिया
रंगाय लेव चुनरी ... ...

(३)

प्रेम रंग डूबी भइ सगरो महकी है
घटा उठी रूम झूम अमरित बरसी है
सुरजो चढ़ी नादे अली गूंज (गूंज) जइहै
अल्लाहू इल्लल्लाह एक बन रहि है
रंगाय लेव चुनरी ... ...

[७९]

धुन धुन धुन धुन धुन री सजनी
सुन सुन सुन सुन सुन री सजनी

(१)

कहूं कहानी सोज़े जिगर की
धूम मची है आहे सहर की
गहरी दुनिया क़ल्बो नज़र की
बात छिड़ी है उनके घर की
धुन धुन ... ...
सुन सुन ... ...

(२)

राम का सूरज देखो चमका
गोशा गोशा रूह का दमका
हरी के द्वारे साजन मनका
झन झन झन इकतारा झनका
सुन सुन ... ...

(३)

इन्ना आतैना कल कौसर
साक़ी मेरा अली पयंबर
मस्त नज़र मस्ताना दिलबर
तौबा टूटी खनके साग़र
सुन सुन सुन ... ...

★

[८०]

चम्पा खिला चमेली फूली
गुलशन खिले हज़ार

चमन में लेकिन बालम
कौन मिसाल तोहार
कि तोहँसे महके जीवन बगिया
ई धरती गुलजार

(१)

मन मन्दिर में देवता बनकर तुम हे नाथ समाये हो
सूरज बनकर चारों जानिब अरस फरस चमकाये हो
रंग बिरंगी लहरों वाली दरिया में लहराये हो
जान पड़ा कि जीवन क्या है तुम जब से घर आये हो

ई धरती गुलजार..... ....

(२)

पांव तुम्हारे सर रखने की दिल में चाह समाई है
कोयल बनकर कूकी निस दिन तब ये लाज गँवाई है
प्रेम अगिन में जलने वाले दिल ने राहत पाई है
देखो हो मद भरी बदरिया उमड़ घुमड़ घिर आई है

कि तोहँसे महके..... ....

(३)

नूर नबी का जीवन दानी चौमुख जगमग होता है
रटता है मन नाम उन्हीं का बड़े चैन से सोता है
नूरी धार बही धरती पर अल्लाह रूप उतरता है
नाम सुनो तो चित ठंढाये देखे भाग बदलता है

कौन मिसाल तोहार··· ··· ··· ·····

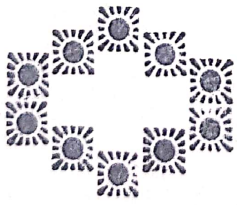

[८१]

छयल मोरा रसिया लिपट के मजा लेला
चिपट के मजा लेला

(१)

आपै पूजा आप पुजारी आपै झाला माला हो
आप मुरकता आप थिरकता आपै ताल बेताला हो
आप लगावे आप बुझावे आपै छले छलावा हो
आपै चितवै आपै मितवै आपै नमक मसाला हो

छयल मोरा··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

(२)

मस्त बना मैखाने अन्दर डूब गया है मस्ती में
मतवाला दिल रखने वाला ही ज़िन्दा है हस्ती में
हरा भरा मन भाने वाला छाया दिल की बस्ती में
हस्ती तो बस है वो हस्ती डूब गयी जो मस्ती में

छयल मोरा··· ·· ··· ··· ··· ··· ···

(३)

वाइज़ कहता है कि सुबह वजू करो मस्जिद जाओ
पीरे मुगां का फरमाना है जाम भरो साग़र लाओ
इधर उधर क्या ढूंड रहे हो मैखाने अन्दर जाओ
उसकी यारी पर दम तोड़ो जिससे रूह गरम पाओ

छयल मोरा··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

[८२]

मैं अपने पीर लासानी के सदक़े
मोईनुद्दीन अजमेरी के सदक़े

(१)

कमाले किब्रिया सूरतगरी में
जमाले ख़ूब तर जिन्नो परी में
अयाँ बेहतर से बेहतर बेहतरी में
ख़ुदा मेरा मेरी इस ज़िन्दगी में

मैं अपने पीर... ... ...

(२)

ग़रीबों की ग़रीबी काटता है
दवा दर्दे जिगर की बाँटता है
नज़र की फेर से दुःख टालता है
निगाहे आसमानी डालता है

मैं अपने पीर... ... ...

(३)

मेरा दिल उनका घर हो वाह रे हम
करम भी इस क़दर हो वाह रे हम
उन्हें मेरी ख़बर हो वाह रे हम
मसीहा चारागर हो वाह रे हम

मैं अपने पीर... ... ...

(३)

ये दर शाहों का ये सर क्या बताऊं
कहाँ लाया मुक़द्दर क्या बताऊं
ये क़तरे में समन्दर क्या बताऊं
नज़र में है जो मंज़र क्या बताऊं

मैं अपने पीर··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

[८३]

फूल गेन्दवा मंगाओ श्याम पैय्याँ पड़ूं

मोर बिन्दिया सजाओ श्याम पैय्याँ पड़ूं

धूंद सारी छटे मोर जियरा जगे

जोत ऐसी जगाओ श्याम पैय्याँ पड़ूं

मन की बगिया खिले रूह को रक्स हो

अपनी बन्सी बजाओ श्याम पैय्याँ पड़ूं

रात कैसे कटेगी तुम्हारे बिना

दूर हमसे न जाओ श्याम पैय्याँ पड़ूं

[८४]

ख़्वाजा पिया हम देखो लाए हैं बधावा
झांको तनिक अपने रौजे बाहर

(१)

आस बन्धाओ निरासा जाए
लौट न देखो पियासा जाए
आने वाला इस चौखट पर
ख़ाली हाथ न दाता जाए

ख़्वाजा पिया··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

(२)

चारों खूंट को तुमहीं राजा
तुमसे बने जग में सब काजा
दोनों जहाँन से राख्यो लाजा
तुम्हरी दोहाई हो महराजा

ख़्वाजा पिया··· ··· ··· ··· ··· ·····

(३)

लाखों को तुमने इज्ज़त दी है
जाने कितनी दौलत दी है
यक मंगता है खड़ा दुवारे
भीगी आंखे हाथ पसारे

ख़्वाजा पिया··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

[८५]

तुम तो सरजू जी के पनियां जिया लहरिया मारैना
पिया लहरिया मारैना जिया लहरिया मारैना

(१)

तनिक सारी मूसरी
मोरे अंगिया माँ घुसरी
दोनों जोबना बीच अंगिया
काटे डारे ना
तुम तो सरजू जी कै पनियां··· ··· ··· ·········

(२)

चंदा हँसत चँदनिया छिटके
बदरा हँसत सेवाती बुन्दिया
तुम जो हँसो तो बालम मोरे
फूले जीवन बगिया
तुम तो सरजू जी के पनियां··· ··· ··· ·········

(३)

धरम करम क्या काबा काशी
यह तो गोरख धन्दा
जादू भरे नयन तुम्हारे
दिल करते हैं ज़िन्दा
अपने गले में डालो यारो
प्रेम गली का फंदा
ऐसी सूरत ऐसी मूरत
ख़ुदा कहुं या बन्दा
तुम तो सरजू जी के पनियां··· ··· ··· ·········

★

तुमसे बड़ी मांग मांग्यौं हो मोरे ख्वाजा

(१)

बांसुरी अपनी बजादो तो कोई बात बने
रूह को रक़्स में लादो तो कोई बात बने
इसको आकाश दिखा दो तो कोई बात बने
इसमें सूरज को बिठा दो तो कोई बात बने

तुमसे बड़ी मांग··· ··· ···· ··· ··· ····

(२)

ज़िन्दगी दर बदर होने से बचालो ख़्वाजा
नाव टूटी हुई है पार लगा दो ख़्वाजा
ग़म के मारों को निगाहों में बसालो ख़्वाजा
इन चिराग़ों को सरे बज़्म जलादो ख़्वाजा

तुम से बड़ी मांग··· ··· ··· ··· ·····

(४)

इश्क़ रग-रग में बसादो तो भला हो जाए
आग तन मन में लगादो तो भला हो जाए
इस तरफ़ हाथ बढ़ादो तो भला हो जाए
रिंद को मस्त बनादो तो भला हो जाए

तुमसे बड़ी मांग··· ··· ··· ··· ··· ·····

[८७]

तोहरे द्वारे आयो जोगी बाबा कुतुब निज़ाम हो
तुमसे दया की भिखिया माँगे तुमको करे सलाम हो

(१)

काँकर मनवा पाथर बोझे बोझै बोझ लदनिया
मुर्दा रहकर ज़िन्दा जाने बिगड़ल बाय चलनिया
कहिए साहेब बिना हुज़ूरी कैसे कटे लिखनिया
मस्ती दे दो इश्क़ नगर में नाचे नाच नचनिया

रस की डूबी एक नजरिया कर दो मोरे राम हो
तुमसे दया की··· ··· ··· ···· ··· ···

(२)

मनवाँ राखे जोड़ के सजनाँ जोड़ी जोड़े काम चले
भोग विलासा भोगी भोगे आशिक़ जलकर नाम करे
निर्मोही को चितवै जितना उतना रग-रग जाग पड़े
ज़िन्दा होना हो तो आशिक़ बनकर सुबहो शाम करे

ज़िन्दा करने वाली किरपा कर दो मोरे राम हो
तुमसे दया की··· ··· ··· ···· ··· ···

[८८]

कौन दुआ मांगू आज मोरी गुंइयां

(१)

लाल लाल चुड़िया में चमके दुलार बना
जोड़ा सजीला में महके बहार बना
गजरा में फूलों के फूले पियार बना
लाल लाल सेजिया पे चमके हमार बना

कौन दुआ मांगूं ... .

(२)

गंगा नहाएं आओ चलो री
निजाम गुरूद्वारा झांको सखी री
ख़्वाजा पिया रौजे जोत जगी री
देवता पुजाऊँ मंगिया भरूँ री

कौन दुआ मांगूं ... ...

(३)

जगर मगर होय बहे अमृत की धारा
मोर महराजा मोरे दिल में बिराजा
नदिया कमल खिला फूलों का राजा
आओ तनी झांके अंगना दुआरा

कौन दुआ मांगूं ... ...

[८९]

मैं वारी वारी वारी ख़्वाजा बनरे पर

ताज सरे औलिया
ख़्वाजा बना, ख़्वाजा बना, ख़्वाजा बना, पीर मेरा बादशाह
ख़्वाजा बना बादशाह

(१)

आसमान और ज़मी
ऐसा कहीं और नहीं
मिसल नहीं दूसरा
पीर मेरा बादशाह

(२)

नाम बड़ा काम बड़ा
जब भी कोई वक्त पड़ा
दौड़ गया पैर पड़ा
मेरी तरफ हाथ बढ़ा
बेड़ा मेरा पार लगा
पीर मेरा बादशाह

(३)

शोर पड़ा हू हू का
झोंका उड़ा ख़ुशबू का
होश गया बेहोशी
क़ैफ़ लाई जीने का
मज़ा मिला पीने का
पीर मेरा बादशाह

(४)

रंग भरी एक नज़र
डाल गई गहरा असर
हाय गज़ब कैसी
रंग गई सारी उमर
चाहे उसने जैसा रंगा
पीर मेरा बादशाह

[९०]

कैसा लेखा कैसा जोखा कैसा भाग मुकद्दर हो

तुम्हरे चाहे सब कुछ बालम निर्धन बने सिकन्दर हो

(१)

सूखा पेड़ हरा हो जाए लौटा जल तालाब भरे
वीराने में गुलशन झूमे धरती दुल्हन रूप बने
सूना जग संसार बसे फिर कोयल कूंके गुल महके
सूखे तन में जीवन दाता तुम चाहो तो जान पड़े

कैसा लेखा कैसा जोखा··· ··· ··· ··· ···

(२)

हम तो भिखारी रोज़े अज़ल के हाथ पसारे घूमे हैं
ठोकर खाई गली गली दुनिया में क्या क्या सीखे हैं
राम दोहाई कठिन है जीना फिर भी कैसे जीते हैं
एक सहारा तुमसे बालम नाम तुम्हारा लेते हैं

कैसा लेखा कैसा जोखा··· ··· ··· ··· ···

★

[९१]

मैं तो बिकाय गई गुइयां
पियरवा मोरा बड़ा बाँका रसीला

(१)

सूरत मोहनी मोहनीयां लागै
धरती चितवै गगना ताकै
बड़े भाग से इश्क़ विराजै
उनको देखे जियरा जागै
मैं तो बिकाय गई… … … … ……

(२)

सूरज निकला सियाही भागी
भूली हस्ती मस्ती जागी
नबी के घर की ख़्वाजा वाली
बड़ी तेज़ उफ-रे मतवाली
मैं तो बिकाय गई… … … … ……

(३)

दिल में जब ये सूरत आई
हरियाली हरसू लहरायी
ख़ुशबू भीनी भीनी छाई
रूह ने ली ऐसी अंगड़ाई
मैं तो बिकाय गई… … … … … …

★

[९२]

हम गवनवा न जाबै बिना झुलनी

(१)

टोला परोसिन देखन आवैं
ताना दइ दइ जाएं
तोहरी पगड़िया पे बोली मारैं
हमका नाहीं सोहांय
आपन लाज बचायो हो बालम
हमरी सुनो हम बतांय

हम गवनवा··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

(२)

तुम तो हो सरकारे दो आलम
कुल जग के महराज
झुकते हैं चौखट पे तुम्हारी
बड़े बड़े सरताज
हम भी मांगे को आए हैं भिखिया
तुमसे ये कहना है आज

हम गवनवा··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

[९३]

कूकुर टुकड़ा मांगे ख़्वाजा

आपन किरपा राख्यो नाँय

(१)

हमरी क्या औक़ात के ख़्वाजा हम कुछ अपना कर लेंगे
संग रहोगे तो सब कुछ है जीलेंगे औ मर लेंगे
बिन किरपा के पिया तुम्हारी कैसे पार उतर लेंगे
दिल को है ये बड़ा भरोसा हमरी आप ख़बर लेंगे

कूकुर टुकड़ा मांगे… … … … … …

(२)

आदम के इस परदे अन्दर देख तो कौन समाया है
ज़िन्दा कायम रहने वाला नूर ज़मी पर छाया है
दर्द ग़रीबों का जाने है रहम बहुत फ़रमाया है
हिम्मत करके आने वाला दुःख सुख कहने आया है

कूकुर टुकड़ा मांगे… … … … … …

[९४]

लो चमका वह रोशन चेहरा मैखाने में शाम हुई
दिल फिर दौड़ा जाम उठाने मस्ती फिर बदनाम हुई

शीश-ओ साग़र जाम सुराही बाद-ओ नाबे पैमाना
मैखाने में कितनी दुनिया दीवानों के नाम हुई

एक वो तुम कि तुमसे ज़िन्दा सुबहे तजल्ली शामे अबद
एक ये हम कि हमसे तो बस सुबह हुई या शाम हुई

जन्नत मेरी दिल के अन्दर मेरी दुनिया मेरा दिलबर
ऐसी दुनिया कि यह सारी दुनिया जिसके नाम हुई

पाकर खो दूँ ऐसी तजल्ली जाओ भी तुम क्या जानोगे
उसकी ख़ातिर मेरी तमन्ना कहाँ कहाँ बदनाम हुई

[९५]

उठत जोबन नैना लड़ गइलैं री दइया
बान करेजवा में गड़ गइलैं री दइया

(१)

भरी पिचकारी लिये रस की भीगी
हमका देखि पसर गइलैं री दइया

उठत जोबन··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया
बान करेजवा··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया

(२)

लाल गुलाल बनायो ऐसा
रगँवा मोर उतर गइलैं री दइया

उठत जोबन··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया
बान करेजवा··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया

(३)

तड़पत जियरा जो उनको देखिस
हमसे आपन बिसर गइलैं री दइया

उठत जोबन··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया
बान करेजवा··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···री दइया

[९६]

कौन अलबेले की नार
छमा छम जाय बजरिया

(१)

कौन महल चढ़ी कौने अटारी
कौने नगरिया में उतरी सवारी
कौन ले आया यही पार
कि सासू ननद खड़ी मारैं नजरिया
कौन अलबेले की नार··· ··· ··· ··· ··· ··· ···बजरिया

(२)

टीका सोहाग जड़ाव गजमोतिया
जैसे अकास से उतरी सुरतिया
जो देखे एक बार
लगन लग जाय धरै प्रेम डगरिया
कौन अलबेले की नार··· ··· ··· ··· ··· ··· ···बजरिया

(३)

उनकी पिरितिया में व्याकुल भये सब
ऐसा निसाना कि घायल भये सब
चित से न जायें सरकार
मजनूँ की तरह फिरै सगरो नगरिया
कौन अलबेले की नार
छमा छम जाये बजरिया

[९७]

तुम्हरे दर पर कटै उमरिया तुम्हरेन साथ गुजारा होय,

ऐसी गरीबी में हो बालम तोहरय एक सहारा होय ।

धरती पर आकाश कै जोबन जैसे नूर का पारा होय,

चितवै जो एक बार तो चाहे सारी उमर नजारा होय ।

तोहरे द्वारे मांगन आवैं राजा परजा रंक फकीर,

हमहूं भीख दया की मागैं हमरो राम गुजारा होय ।

मन्दिर मस्जिद हमका जानी तीरथ बरत न हम पहचानी,

डगर वही बस तुम्हरे घर की तुमबिन कसत गुजारा होय ।

छैला मेरा ऐसा जैसे फुलवा फूलै बीच बहार,

रंगवा ऐसा चमकै जैसे कउनो राम दुलारा होय ।

★

बदरा जो बन के अंगना बरस देव कुछ तो बिपतिया कम होइ जाई

नयना जो लागे हो बालम तुमसे तो हमका जानी जुलम होइ जाई।

चन्दा न देखै चकोरवा तो मरिजाय लागी न छूटै जैसी गुजर जाय,

ऐसी लगनिया हमरौ जो बनिजाय तब तो सुआरथ जनम होइ जाई।

टूटी मड़इया बा कैसे गुजरिहै अखिया कै अँसुवा कैसे सुखइ है,

बालम हो तुमसे बस इतनी अरज है कि तुम चाहो तो रहम होइ जाई।

कहदिहिन हैं कि लहरिया न मारेओ देखा जो चाहोतो मैखाना आयो,

अँधरा का चाहै बस दो आँखें अब तो ये रिन्दी धरम होइ जाई।

मोरी नगरिया मा हीरा बसा है सीने में जैसे नगीना जड़ा है,

ऐसा नगीना कि हाय राम एकै झलकिया जुलम होइ जाई।

[९९]

ऐ जलवये जानाना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर,
ऐ जज़्बे फ़क़ीराना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

हर रंग में वो जलवा कि बस देख के रह जाय,
ऐ दिलबरे मस्ताना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

उस दर से है निस्बत तो यह सर भी है सलामत,
संगे दरे जानाना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

बेकस की नज़र तेरी तरफ़ लमहा ब लमहा,
माँगा करे दीवाना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

मैं डूब गया ताबा क़दम भूलूँगा कैसे,
ऐ रंगे परीख़ाना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

मैख़ाने में जो कुछ है सब एहसान है तेरा,
ये जाम ये पैमाना तेरी ख़ैर तेरी ख़ैर।

[१००]

मम्बये फैज़े नबूवत हुम विलायत हैदरी
आफ़ताबे चिश्तियाँ मख़दूम साबिर कलयरी

(१)

रौज़ये अनवर पे ऐ दुनिया जबीं तेरी झुकी
सितवते सुल्ताने आलम की अजब जलवागरी
हर तरफ़ बरपा नियाजो नाज की जादूगरी
दिलकशी सायाफिगन हर चार जानिब दिलबरी
दिलबरी ऐ दिलबरी ऐ दिलबरी ऐ दिलबरी ... ... मम्बये
मम्बये ... ...हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

(२)

दिल में उस शाने करम की बात कुछ ऐसी रही
दर पे उनके बन्दगी मेरी उन्हें तकती रही
चूमने को उनकी चौखट यह जबीं बढ़ती रही
और ज़बाने शौक़ मेरी उनसे यह कहती रही
जाने क्या शै है तुम्हारी ये नज़र जादू भरी
मम्बये ... .हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

(३)

एक मुहताजे करम पर ऐसी बन्दा परवरी
तेरी शाने फ़क्र पर क़ुरबान है असकन्दरी
ज़ख्म को मरहम मिले हर चाक को बख़ियागरी
हैरान हूँ कैसी है ये साक़ी तेरी शीशागरी
दर्द मन्दो के ख़ुदा ऐ मालिके हर बरतरी
मम्बये ... ...हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

★

मम्बये फ़ैज़े नबूवत हम विलायत हैदरी
आफ़ताबे चिश्तियाँ मख़दूम साबिर कलयरी

(१)

रौज़ये अनवर पे ऐ दुनिया जबीं तेरी झुकी
सितवते सुल्ताने आलम की अजब जलवागरी
हर तरफ़ बरपा नियाज़ो नाज़ की जादूगरी
दिलकशी सायाफिगन हर चार जानिब दिलबरी
दिलबरी ऐ दिलबरी ऐ दिलबरी ऐ दिलबरी ... ... मम्बये
मम्बये ... ...हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

(२)

दिल में उस शाने करम की बात कुछ ऐसी रही
दर पे उनके बन्दगी मेरी उन्हें तकती रही
चूमने को उनकी चौखट यह जबीं बढ़ती रही
और ज़बाने शौक़ मेरी उनसे यह कहती रही
जाने क्या शै है तुम्हारी ये नज़र जादू भरी
मम्बये ... .हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

(३)

एक मुहताजे करम पर ऐसी बन्दा परवरी
तेरी शाने फ़क्र पर क़ुरबान है असकन्दरी
ज़ख्म को मरहम मिले हर चाक को बख़ियागरी
हैरान हूँ कैसी है ये साक़ी तेरी शीशागरी
दर्द मन्दो के ख़ुदा ऐ मालिके हर बरतरी
मम्बये ... ...हैदरी
आफ़ताबे ... ...कलयरी

★

[१०१]

जाने हया जब आप निगाहों में आ गये,
जो कुछ नसीब से हमें पाना था पा गये।

रग रग में दौड़ती फिरी मस्ती हयात की,
आबे हयात लेके मसीहा जब आ गये।

वो रंग था कि जोभी चमन की तरफ़ गया,
जानो जिगर में जलवे हि जलवे समा गये।

जाने कहाँ कहाँ फिरी वहशत तमाम उम्र,
दीवाने कैसी कैसी कहानी बना गये।

मुहताज पे करम की नज़र कौन डालता,
तक़दीर थी जो आपके कदमों में आ गये।

★

[१०२]

हमरी अटरिया आवो हो बालम देखा देखी तनिक होइ जाय

(१)

लागल करेजवा में बान गोहरावै,
प्रीत तोहरी रहिया में अँखिया बिछावै ।
कजरा नयनवां में सपना सजावै,
अंग अंग फड़कै निदिया न आवै ।

हमरी अटरिया आवो··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···होइ जाय

(२)

बगिया महक जाय फुलवा जो फूले,
यादों के झूले में मनवा झूले ।
दरिया में मौज उठे साहिल को छूले,
दिल में बसा हो जो कोई कौन उसे भूले।

हमरी अटरिया आवो··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ····हो जाय

(३)

रंगे जूनूँ चमके तो मनवा लहक उठे,
नाज़ भरी चितवन से ख़ुशबू महक उठे ।
दर्द बसा दिल में रहे जीवन दमक उठे,
ऐसा करो बालम ये ज़र्रा चमक उठे ।

हमरी अटरिया आवो··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···होई जाय

★

[१०३]

झूमत आवैं नन्द के लाला गलियों में नजरिया लगि जइहै ।

(१)

अईसी बँसुरिया कि मन मोह डारेयो
छबि वह ऐसी कि बउरी बनायो
देखत उनको समझ यही आयो
कि जियरा निकासि के उन पर वारेयो ।

झूमत आवैं नन्द के लाला ... ... जइहै ।

(२)

चन्दन बदना अंजन नयना हमरे भाग सोहाग
उन क़दमों की धूल जो पायें उनके धन धन भाग
मोह नगर में जादू डारै छीनले दिल चितचोर
जागे उसके भाग कि जो भी देखे उसकी ओर ।

झूमत आवैं नन्द के लाला गलियों में नजरिया लगि जइहै ।

नबीजी नबीजी रटैं पिंजरे में सुगनवाँ,
सइयद हो ई सुगना सलाम करै।
आपन अरजिया हो तुमसे गुलाम करै॥

(१)

पिरितिया जो कोहू तोंहसे लगावै,
तो का करै मनवाँ को कैसे मनावै।
जियरा जरैला हो कैसे बुझावै,
सिनवा फटैला हो कैसे जुड़ावै॥
सइयद हो ई सुगना सलाम करै।
नबीजी नबीजी··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···सुगनवाँ
सइयद हो ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· करै
आपन अरजिया ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· करै

(२)

कुल संसार में तुमहीं बड़े हो,
तुम भगवान की छइयाँ खड़े हो।
तुम तो रतन अनमोल जड़े हो,
शक्ले ख़ुदा में दिखाई पड़े हो।
सइयद हो ई सुगना सलाम करै
आपन अरजिया हो तुमसे गुलाम करै।
नबीजी नबीजी ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ·· सुगनवाँ
सइयद हो ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· करै
आपन अरजिया ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···करै

★

[१०५]

बीरन मेरे मेरी आस निभाना
इस दुनिया के अँधियारे में
बस तुम मुझको भूल न जाना

(१)

मैं क्या करता मै क्या पाता,
तुमने दया किया है दाता।
दाता तुमने दया किया है,
वरना मैं क्या जीने पाता।

बीरन मेरे ... ... निभाना
इस दुनियाँ ... ... में
बस तुम ... ... जाना।

(२)

इनसे उनसे कुछ नहीं जोड़ा,
अपना पराया सब कुछ छोड़ा।
एक तुम्हीं बस एक तुम्हीं से,
रिश्ता जोड़ा नाता जोड़ा।

बीरन मेरे ... ... निभाना
इस दुनियाँ ... ... में
बस तुम ... ... जाना।

(३)

तोड़ूँ कैसे छोड़ूँ कैसे,
प्रेम पियाला फोड़ूँ कैसे ।
दिल को मस्ती मिली जहाँ से,
वह मयख़ाना छोड़ूँ कैसे ।

बीरन मेरे ... ... निभाना
इस दुनिया ... ... में
बस तुम... ... ... जाना।

[१०६]

कैसे न देखूँ यार की जानिब क्यों कर न उनकी ख़ैर मनाऊँ।
यार मेरा वह यार कि जिसपर दोनों दुनिया हो तो लुटाऊँ॥

घर मेरा हो उनकी गली में उनकी गली में आऊँ जाऊँ।
यारब मेरे सुनले मेरी अब दुनिया में कहीं न जाऊँ॥

कैसा है वह नूर सरापा होश नहीं कैसे बतलाऊँ।
मैं तो बस जी जान से सदक़े उनकी जान पे वारी जाऊँ॥

गुलशने दिल में ताज़ा ताज़ा फूल खिलाऊँ हार बनाऊँ।
हूँ जब तक दुनिया में ज़िन्दा मैं अपने साजन को पिन्हाऊँ॥

सूरत उसकी काबा मेरा कुल दुनिया में जलवा उसका।
उसकी किरपा हो तो कभी मैं नूर बनूं नूरी कहलाऊँ॥

तोहरी नगरिया में लागी बजरिया
ऐसी बजरिया हो ख्वाजा सँवरिया
कि हाय राम
जियरा लोट लोट जाय।

(१)

दिलका चमन हो राहते जाँ हो,
हर एक आलम में जलवा फ़िशाँ हो।
कैसे बताऊँ जाने कहाँ हो,
उस ला मकाँ में भी तुम एक मकाँ हो ।।

तोहरी नगरिया में ... ... बजरिया
ऐसी बजरिया ... ... सँवरिया
कि हाय राम
जियरा ... ... जाय

(२)

सबसे हो बेहतर कामिल तुम्हीं हो,
हस्तिये दिल का हासिल तुम्हीं हो।
इस जानो तन की महफ़िल तुम्हीं हो,
मेरे जुनूँ की मंजिल तुम्हीं हो ।।

तोहरी नगरिया में ... .बजरिया
ऐसी ... ... सँवरिया
कि हाय राम
जियरा ... . जाय

(३)

ये दस्ते गदा तो है लेकिन भरा है,
तुम्हारे करम ही से सब कुछ मिला है।
ये सर सजदये शुक्र में झुक गया है,
तुम्हारी गुलामी में कितना मज़ा है ॥

तोहरी नगरिया में ... ... बजरिया
ऐसी ... ... सँवरिया
कि हाय राम
जियरा लोट लोट जाय।

[१०८]

मैंने जिस रंग में रंग लिया दिल वह कभी छूट सकता नहीं है।
ये मोहब्बत का रिश्ता है ऐसा जो कभी टूट सकता नहीं है॥

यह सफ़र जानो तन का है जिसमें मैं मुसाफिर अकेला नहीं हूँ।
साथ है वो ख़ुदा बन के मेरा हौसला टूट सकता नहीं है॥

मैंने सोचा है उनसे किसी दिन अर्ज़ इतनी तो करके रहूँगा।
रंग तुम चाहे जितने बदल लो दिल मेरा टूट सकता नहीं है॥

मैंने दुनिया की नजरों से बचकर इश्क़ को अपने दिल में बसाया।
यह ख़ज़ाना है ऐसा कि इसको अब कोई लूट सकता नहीं है॥

मैकशी है मेरा दीनो मज़हब मैं पुजारी हूँ अपने सनम का।
मुझसे दुनिया जो छूटे तो छूटे मैकदा छूट सकता नहीं है॥

[१०९]

एक नूर वाले का हर तरफ़ उजाला है।
क़ायनात में हर सू उसका बोलबाला है॥

उसके दम से रौशन हैं मैकदे तजल्ली के।
मैकदों में जानो दिल उस करम ने पाला है॥

आशिक़ी निछावर है उस हसीन के ऊपर।
उसके हुस्ने कामिल का रंग ही निराला है॥

फख़रे ज़िन्दगी अपना दाग़ है गुलामी का।
उनके हाथ अपने को हमने बेंच डाला है॥

हमने अपने दिल की बात जब भी की तो की उनसे।
और फिर सिवा उनके कौन सुनने वाला है॥

[११०]

ख़्वाजा ख़्वाजा करैला हो ख़्वाजा कै पुजारी
पुजवा करैला हो पुजरिया
सिरवा धरैला हो पुजरिया
गोड़वा लगैला हो पुजरिया
पुजवा करैला हो पुजरिया

(१)

दर्शन दीद कै भुखानी अँखिया
उनके रूप कै दिवानी अँखिया
जागै नाहीं सोवै नाहीं बीत जाले रतिया
पुजवा करैला ... ... ख़्वाजा ख़्वाजा

(२)

दियना बारैला हो मन्दिरवा
फुलवा वारैला हो मन्दिरवा
अइसी सूरत अइसी मूरत ख़्वाजा के मन्दिरवा
पुजवा करैला ... ... ख़्वाजा ख़्वाजा

(३)

थिरकत आवैला हो सँवरिया
वारी डारैला हो सँवरिया
तनवा वारै मनवा वारै ख़्वाजा की सुरतिया
पुजवा करैला ... . ख़्वाजा ख़्वाजा

★

[१११]

वो आलमे मस्ती है साक़ी की निगाहों में
मय जैसे उबलती हो सावन की घटाओं में

जब उनके तसव्वुर की बातें हों तो दिल बहले
ले चल ग़मे हस्ती को पुर कैफ़ फ़िज़ाओं में

दुनिया जिसे कहते हो क्या जान के पाओगे
ये आग का मातम है गुज़रेगी शरारों में

ये नक़्शे वफ़ा कितना गहरा है कि वह पैकर
काबे के बराबर है मजनूँ की निगाहों में

पैमाना बकफ़ दिल को मख़मूर बनाता है
जो नूर चमकता है इन चाँद सितारों में

★

[११२]

अज़ली नूर से चमकै रौजा राज करे महराजा मेरा
ख़्वाजा जी क्या शान तुम्हारी राज दुलारा ख़्वाजा मेरा

(१)

नजर नजर यह नजर बड़ी है
क़ायम जिससे दिल नगरी है
अर्शे बरीं पर धूम मची है
दुनियाँ कैसी झूम रही है
ख़्वाजा जी क्या··· ··· ··· ··· ·····

(२)

खोकर देखो पाकर देखो
आओ तो कुछ लाकर देखो
दामन तो फैलाकर देखो
कह दोगे तुम जाकर देखो
ख़्वाजा जी क्या ·· ··· ··· ··· ··· ···

(३)

नगरी - नगरी द्वारे - द्वारे
बसे हैं मन में ख़्वाजा प्यारे
ख़्वाजा प्यारे जग उजियारे
दुखियों के अनमोल सहारे
ख़्वाजा जी क्या··· ··· ··· ··· ··· ···

★

[११३]

मन मन्दिर के राम
ख़्वाजा करे सलाम

चिरैइया बोलन लागी
रटे तुम्हारा नाम
चिरैइया बोलन लागी

(१)

पानी से क़तरा बन आया
ज़ात सिफ़त की सूरत लाया
ला और इल्लल्लाह मिलाया
अहमद रूप ख़्वाजा कहलाया

मन मन्दिर के राम
ख़्वाजा··· ··· ··· ··· ···

(२)

सूरते रहमाँ अहद समद में
नाद बजा बेहद अनहद में
सारे फ़रिश्ते उनकी मदद में
ख़्वाजा आदम आदम हद में

मन मन्दिर··· ··· ·····
··· ··· ··· ··· ··· ·····

(३)

दिल के साथ रहे दिलवाला
ज़ात तजल्ली अक्स निराला
बंसी ढोल मजीरा वाला
हरा भरा ख़्वाजा हरियाला

मन मन्दिर··· ··· ······
··· ··· ··· ··· ··· ·······

★

[११४]

चलो आओ सखी अजमेर चलें
ख़्वाजा की दुअरिया छम छम छम

(१)

दुखिया की भी ख़्वाजा लीजे ख़बर
मै तुम्हारे दुआरे बिताऊँ उमर
बस एक नज़र ख़्वाजा एक नज़र
मोरी किस्मत दमके दम दम दम
चलो आओ सखी.....

(२)

मस्तानी हवा शादाब चमन
हर सिम्स हवा में सोंधापन
उतरा हुआ है धरती पे गगन
ख़्वाजा की नगरिया चम चम चम
चलो आओ सखी.....

(३)

हो रूह जो मस्त तो हस्ती है
बेमस्त बने क्या हस्ती है
ख़्वाजा के नगर में बरसती है
चली आओ गुजरिया छम छम छम
चलो आओ सखी.....

(४)

हे राज दुलारे ख़्वाजा बना

हे राजा बना हरियाला बना

इस दिल में भी अपना ठिकाना बना

हे ख़्वाजा सँवरिया रहम रहम

चलो आओ सखी.....

[११५]

जोत जगी असमानी
चुनर मोरी धानी
सजनवा हो
बलमवा हो
आज जी भर के देखो

(१)

चंदा बिन गगना में चमक है
मधुबन में फूलों की महक है
पागल करने वाली लहक है
बिजली है बिजली में लपक है

जोत जगी असमानी.....

(२)

देखो वो आए राज दुलारे अजमेर वाले पियरवा
ग़ौसो क़ुतुब आए धूम मचावत झूम उठा है जियरवा
काली बदरिया से मोतिया बरसे मंगिया में चमके जैसे सितरवा
हमरे सुहाग माँ हीरे जड़े हैं दम दम दमके जैसे नगिनवां

सजनवा हो.....

(३)

सागर में सीपी सीपी में मोती
मोती में चमके पिया की सुरतिया
पिया की सुरतिया मैं देख भुलाय गई
अपने पराए की सगरो बतिया

आज जी भर के देखो.....

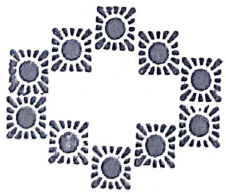

[११६]

पत राखो न राखो तोहार मरजी
बदनामी तो हो गई उमर भर की

(१)

कैसी गुज़र गई कैसे बताई
आपन गरीबी कैसे देखाई
तोहरे समनवा कैसे सुनाई
जानत हो तुम तो हम का बताई

तुम जैसी बनायो वैसी बजी
बदनामी तो हो ... ...
... .

(२)

सजन हाथ दामन तुम्हारा न छोड़े
नयन द्वार झाँके मोहारा न छोड़े
पुजारी तुम्हारा दुआरा न छोड़े
लगन बाँध राखे सहारा न छोड़े

तुम्हारे ही दम से बनी सो बनी
पत राखो... ... ...
... ...

(३)

बँधी है मेरी आस अपने ख़ुदा से
हमे क्या जो कोई हो अपनी बला से
जो दिल बाँध ले अपना राहे वफ़ा से
उसे तो ग़रज़ है तुम्हारी रज़ा से

नज़र है तुम्हारे करम पर लगी
पत राखो··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ·· ··· ··· ··· ··· ···· ····

[१२०]

छम्मक छैयां छम्मक छैयां
मोरी गुइयां मोरी गुइयां
धरती विराजैं महराज
चलो परनाम करैं
आओ गुइयां आओ गुइयां

(१)

चूनर रंगाय लेयो धानी तो टीका लगाओ चमकीला
रंग बीरंगी अंगिया मँगाओ चोला जमाओ महकीला
सूरजमुखी का गोटा किनारा चन्द्र फूल चटकीला
अंग अंग शिवनाद बिराजे अली शंम्भू कजरीला ।

धरती विराजैं ... ...

(२)

चंदा सूरज अंगना उतर आए आओ दिखायें
रूप सरूप की जोत जगी आओ गंगा नहायें
ताल तलैया भरके बहें नदी बन जायें
मैं तुममें हूँ तुम हो मुझमें क्या बतलायें ।

धरती विराजैं ... ...

★

[११९]

थिरक थिरक जाए जियरा
सैयाँ को देखे

(१)

बीच बजरिया चोटाय गई दैय्या रे
बेमोल मैं तो बिकाय गई दैय्या रे
नौलख जोबना लुटाय गई दैय्या रे
चुनरी रंगीली रंगाय गई दैय्या रे
थिरक थिरक जाए ... ...

(२)

मन की कहानी कहूँ कैसे हाय राम
मदमाते जोबना सहूँ कैसे हाय राम
सैयाँ की बहियाँ गहूँ कैसे हाय राम
मनवा सम्भाले रहूँ कैसे हाय राम
थिरक थिरक जाए ... ...

(३)

सूरत मूरत की छबि न्यारी
बिरज के छैला अवध बिहारी
नूरे दो आलम जग उजियारी
मक्की मदनी शोभा न्यारी
थिरक थिरक जाए ... ...

★

आज पूजे देवता चउक मां
लाओ सैंय्यां तनिक आपन पैयाँ बढ़ाओ

(१)

भाग में तुमसे लिखी थी यारी
दिल ने दुनिया अलग बसा ली
देखो अपनी हस्ती मिटा ली
हमरे तो खुल गए भाग
आज पूजे देवता ... ...

(२)

वो देखो वो ख़्वाजा आए
कुल संसार के राजा आए
सीस झुके अदब से यारों
तन मन धन सब अपना वारो
हमरे तो खुल गए भाग
आज पूजे देवता ... ...

(३)

बैठे चौक मोर अली महराजा
अर्श पै चमकें जैसे तारा
ठाढ़े हैं जिबरील दुआरा
पूर करो सब पूरन हारा
हमरे तो खुल गए भाग
आज पूजे देवता ... ...

★

[११७]

आओ चलो जाने बहार
उनको चादर चढ़ा आएं

(१)

दिल ले चलो बेकरार
आओ चलो उनको दिखा आएँ
गज मोतिया गले का हार
संदल माथे चढ़ा आएँ
नैनवाँ अंजन सार
चमकत बिजली दिखा लाएँ
आओ चलो··· ··· ··· ··· ··· ···

(२)

उनको जाना ईसुर को जाना
नाम रूप का भेद न माना
काबा काशी सिर्फ बहाना
उनके कदमों में है ठिकाना
हमने तो बस इतना ही जाना
आओ चलो ··· ··· ··· ··· ····

[१२१]

नदिया किनारे बेला किन्हें बोया

(१)

छैल छबीले मन मां समाए
गहरी नदिया चढ़ती जाये
जल की धारा बहती जाये
लेकिन कोई समझ न पाये

नदिया किनारे··· ··· ··· ···· ····

(२)

मोर पियरवा जीवन मोरा
प्रेम का बन्धन जादू का डोरा
मनवां खींचे अपनिन ओरा
हाय ग़ज़ब उफरे चित चोरा

नदिया किनारे··· ··· ··· ··· ····

(३)

आठ पहर सतरंगी मेला
जीवन रंग बिरंगा खेला
लाल, गुलाबी, हलका पीला
काफी है बस एक अकेला

नदिया किनारे··· ···· ··· ··· ····

[१२२]

शाह चिराग़ के रौजे ननदी हो
चलो पइयां पइयां

सांझ भई अब दीयना बारें
हे ननदी हो
चली पइयां पइयां
तनी पइयां पइयां ।

(१)

आंसू से भीगा हुआ दामन
ग़म से पिघला - पिघला सा मन
उनकी चौखट मेरी रतन धन
मैं तो लुटादूं अपना तन मन
दर्द भरी आवाज़ लगाई
शाह चिरागे हिन्द के द्वारे
मेरे मुक़द्दर को तो देखो
किसको आज पुकारे
शाह चिराग़ के रौजे··· ··· ··· ···

(२)

दर्द भरे दिल ऐ मेरे दिल
देख भी ले जाकर यह महफिल
और कहीं होना है मुशकिल
ऐसा जलवा इतना बड़ा दिल
मैं अपने दिल से कहता हूँ उनकी याद में सांझ सकारे
लमूहा लम्हा बीते हर दम बे उनके इक पल न गुज़ारे
चलो ननदी हो तनी पइयां पइयां

(३)

शाने तजल्ली का बाँका पन
नूर सरापा नूरी दामन
फ़ैज़ भरा हरियाला सावन
हरा हुआ रूखा सुखा मन
मन के अन्दर बसने वाले हे भगवान हमारे
तुमको कैसे भूले कोई तुमको कौन भुलाये
चलो ननदी हो तनि पइयां पइयां··· ···· ···· ···

[१२३]

कहीं बोले काग अरे मोरी गुईंयां
भोर होत मैं अंगना बोहारूं
पीया ऐहैं आज अरे मोरी गुईंयां

(१)

गज मोति हार गले अंखियों में कजरा
नैन भरे जदुआ से छलके मधुवा
सपनों का राजा मोरा मन बसिया
जियरा निकस जाय देखे सुरतिया
कहीं बोले काग··· ··· ··· ··· ······
पीया ऐहैं ··· ··· ··· ··· ··· ······

(२)

देख लेओ पिया को तो जियरा जुड़ाय जाय
पीर बढ़ी हिरदय की गुईंयां पटाय जाय
अंखियों में कजरा की धारी हेराय जाय
राम करे पिया मोरा मुझमें समाय जाय
कहीं बोले काग··· ··· ··· ··· ······

★

[१२४]

तुम पे दिल आगया है ख़ुदा की कसम
जीने का अब मज़ा है ख़ुदा की कसम।

रूह हो जान हो जाने क्या चीज़ हो
ये अजब माजरा है ख़ुदा की कसम ।

दोनों आलम बिका है तेरे वास्ते
जानों दिल चीज़ क्या है ख़ुदा की कसम ।

मेरी हस्ती ही क्या तुम हो हस्ती मेरी
घर ये तुमसे बसा है ख़ुदा की कसम ।

दुनिया हो मुहब्बत की रग रग में समाये हो
ऐ जाने वफ़ा तुम तो दीवाना बनाये हो

उस हुस्ने मुजस्सम के तुम जलवये नूरी हो
तुम नूर सरापा हो कौनैन पे छाये हो

तुम पैकरे मस्ती हो तुम मस्तीये सहबा हो
तुम पैकरे आदम में कुछ सोंच के आये हो

मै और किसे देखूँ जब और नहीं कोई
हर ज़र्रये आलम में तुम ख़ुद ही समाये हो

ज़ंजीर लिये दौड़ा दीवाना सुए मक़तल
तुम आज सरे मक़तल शायद चले आये हो

हे सरकार निज़ाम तुफ़ैले ख़ुसरो आक़ा
दिल को मस्त बना दीजे मस्ती भर दीजे
अपने दर का कुत्ता कहलाने लायक कर दीजे

(१)

इश्क़ नगर के दाता तुमने मस्तों को मस्ती दी है
फ़ना से गुज़रा गदा कोई तो रहम किया हस्ती दी है
तुमने घर आबाद किये सरकार तुम्हीं से आस जुड़ी है
हे सरकार निज़ाम··· ··· ··· ··· ·····दीजे

(२)

यह दरबार तुम्हारा आक़ा तस्कीने जानो दिल है
सिजदा गाहे अहले नज़र है दिलवालों की महफिल है
दिलवालों के लिये यही दीदार ख़ुदा की मंज़िल है
हे सरकार निज़ाम··· ··· ··· ··· ·····दीजे

(३)

क़ुतुब फ़रीद सरापा तुम एक नूरी तन हो
चिश्ती घर की शान हो तुम अनमोल रतन हो
बादा जाम सुराही हो पुर कैफ़ चमन हो
मस्तों की बस्ती हो तुम ख़ुद मस्त मदन हो ॥
हे सरकार निज़ाम ·· ··· ··· ··· ·····दीजे

★

[१२७]

मन तुमसे लगा सो लगा बलमा दुखिया मन तुमको बिसारत काहे
बड़ भाग सोहाग मिले तो कहौ कोऊ अपनो सुहाग उजाड़त काहे

बौरी भई सब सखियां सुन के देखो झूम उठा मधुबन सारा
मदमाते नयन न इशारा करें तो मुरारी बंसुरिया बजावत काहे

पट बन्द न कीजो ग़रीब नवाज के लाज मेरी देखो जाने न पाए
तुम्हारे दुआरे भिखारी न पावे तो दौड़ के माँगन आवत काहे

अब तो मैं अकेली नहीं हूँ पिया उजियार भई जीवन नगरी
हो दीन दयाल जो तुमसा धनी मनराज सुहाग न पावत काहे

[१२८]

ये तमन्ना है कभी इस दिल में भी आ जाइये
रंगे दिल रंगे चमन जाने हया बन जाइये

सर को कदमों पर कभी रखकर कहूँ कुछ हाले दिल
हम ग़रीबों से भी कुछ अरज़े वफ़ा सुन जाइये

और ये दुनिया अगर जीने न दे तो गम नहीं
आसरा इस ज़िन्दगी को आपका ही चाहिए

एक हसरत है निछावर कर दें उनपे जानो दिल
उनके कूचे ही में अब सोंचा है कि मर जाइये

वार दूँ ये ज़िन्दगी जानो जिगर क्या चीज़ है
मुन्तज़िर हूँ हुक्म का कुछ तो कभी फ़रमाइये

★

[१२९]

सइंया के नगर चलो गोरिया संभार के

(१)

नैनों में कजरा गले में गजरा
फूल लाओ चुन कर बहार के
पिया घर जाओ सुरतिया सँवार के
सइंया के नगर चलो.....

(२)

झनक होइ अँगना
तो बोलै लागी सुगना
जइयो पयलिया उतार के
सेजिया पे जइयो गोरिया सँभार के
सइंया के नगर चलो.....

(३)

ठगवा जो मिलिहै
तो गठरिया छिनैहै
देख्यो तनी अँखियाँ उघार के
पिया घर जायो रहिया निहार के
सइंया के नगर चलो.....

(४)

सेजिया महकिहै तो
मनवा लहकिहै
पिया की सुरतिया निहार के
सइंया को रिझायो मँगिया सँवार के
सइंया के नगर चलो..... .....

[१३०]

दिल से निकली ये आवाज़
अल्ला मुर्शिद मुर्शिद अल्ला

आठो पहर बजे ये साज़
अल्ला मुर्शिद मुर्शिद अल्ला
दिल से निकली··· ··· ··· ··· ··· ···

(१)

छेड़ गये ये नैन गुलाबी
कर दीन्हों मोहे मतवारी
सुध बुध अपनी तुम पर वारी
छैल छबीले मदन मुरारी
अल्ला मुर्शिद··· ··· ··· ··· ··· ··· ···· ····

(२)

जान तुम्हीं इमान तुम्हीं हो
मय खाने की शान तुम्हीं हो
हममें एक इन्सान तुम्हीं हो
अल्ला की पहचान तुम्हीं हो
दिल से निकली··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ····

(३)

ला में अपना आप गुमाया
इल्लल्ला में तुमको पाया
नूर नबी का हरसू छाया
सूझ पड़ी अब नूरी काया
अल्ला मुर्शिद··· ··· ··· ···· ··· ··· ··· ···

★

[१३१]

इश्क नचाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां
प्यार जगाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां

यार बुलाता है मुझे आ मस्ती में
जाम दिखाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां

रूप दिखाता है मुझे आ हस्ती में
यार बनाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां

होश गंवाता है मेरे आ मस्ती में
रिंद बनाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां

एक छबीला बांका आ के बस्ती में
रात जगाता है मुझे सुन हो मोरी गुइयां

★

नदिया किनारे खड़ी मारे सिसकारी गोरी
रहिया निहारे कब अइहो बलमू

मोरी चढ़लबाय जवानी
सुधिया लीहो बलमू

(१)

चुनरी रंगायों धन पियरी चढ़ायों
पियरी चढ़ायों और देवता मनायों
हमरे मंगिया कै सेन्दुरवा
कहिया लइहो बलमू ॥
नदिया किनारे··· ··· ·····

(२)

गाड़ि गई खुंटिया औ बांध गई रसिया
तो छूटे नाहीं गंठिया
औ भूले नाहीं छैला की सुरतिया
सुरतिया कब दिखइहो बलमू ॥
रहिया निहारे··· ··· ··· ···

(३)

बाबा के अंगनवाँ में निंबुवा कै पेड़वा
डारी पे बैठ के बोलैले कोयलिया
कुहुकै कोयलिया लगावे आग छतिया
हमरी छतिया कब जुड़इहो बलमू ॥
रहिया निहारै··· ··· ··· ···

★

[१३३]

मेरी दीवानगी काम आही गई आज मैं ज़िन्दगी का पता पा गया,

उन निगाहों का मुझ पर करम जब हुआ दिल के गुलशन में दौरे बहार आ गया।।

देखने के लिये वो नज़र चाहिये एक जानिब उठे एक जानिब रहे,

आसरा एक ही का बड़ी चीज़ है आसरा जब मिला तो मज़ा आ गया ।।

ऐसी रौनक कहाँ दैरो काबा में है ज़िन्दगी चाहिये तो चलो मैकदे,

साकिये मैकदा वो बड़ी चीज़ है जिसने पाया उसे वह ख़ुदा पा गया ।।

थी घड़ी जाने वो कौनसी उसने ऐसी निगाहों से देखा मुझे,

मैं शराबी बना मैकदे में रहा जामो साग़र मेरी रूह को भा गया ।।

कुछ तमन्ना करूँ तो गुनहगार हूँ और उसके सिवा कुछ तमन्ना नहीं,

मेरी हस्ती में है एक सूरत वही मेरी हस्ती पे वो इस तरह छा गया ।।

★

[१३४]

लाओ जाम सुराही

जोशे जुनूँ ने ली अंगड़ाई
नजरे वफ़ा लाए सौदाई
राजा हो तनि देखो तो
ख्वाजा हो तनि देखो तो

(१)

झांझ मजीरा ढोलक तासा
गमक पड़ी तो मनवा नाचा
देख तजल्ली हुआ तमाशा
तान के चादर सोया राजा
राजा हो तनि देखो··· ··· ···

(२)

क़ुतुब बनावैं मोतिन माला
दिया फ़रीद ने झूमर बाला
चूंदर छापी साबिर आला
पिया निजाम से पीकर प्याला
जोशे जुनूँ ने ··· ··· ···

(३)

तन में साजन मन में साजन
साजन के घर बाजे बाजन
कोयल कूकी झूमा मधुबन
आये साजन आये साजन
राजा हो तनि देखो··· ··· ···

[१३५]

ख़ानए दिल में आइये रौनक़े—जाँ—बढ़ाइये

आपसे है ये ज़िन्दगी आप न भूल जाइये

मेरी तलब को और कुछ इसके सिवा न चाहिये

लाइये हाथ दीजिए दस्ते करम बढ़ाइये

मिटती हुई हयात को आबे हयात चाहिए

यानी करम की बात है शाने करम दिखाइये

मेरी इबादतों से क्या बन्दये नारसा हूँ मैं

एक तवज्जहे हसीं आपकी सिर्फ चाहिए

मेरे गुमान से बलन्द आपकी पाक ज़ात है

आपके पाक ज़ात की कौन मिसाल लाइये

थी निगाहे इश्क़ की दिलबरी कि वह तीर दिल में उतर गया
यह बड़ें नसीब की बात है कि तुम्हारे क़दमों पे सर गया ॥

यही मैकदा यही जामो मय मेरे जानो दिल मेरी ज़िन्दगी
वही लमहा लमहा हयात है कि जो मयकशी में गुज़र गया ॥

कोई चीज़ है मये इश्क़ भी कि ये रंग रंग की लज़्ज़तें
मैं तमाम दुनिया को भूलकर इसी मयकदे में ठहर गया ॥

वही राहे दिल वही क़ाफिला वही जुस्तजू वही चारसू
मैं तम्हारी याद में हर तरफ़ बड़े हौसले से गुज़र गया ॥

थी वो ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी न तो जज़्बे दिल न तो मैकशी
मैं तेरे करम पे निसार कि मैं तेरी गली में सँवर गया ॥

★

[१३७]

देबैं रे मलिनियाँ तोहे हार गजमोतिया के
ऐसन माला बनाओ रे
फुलवा से महके मोरे भाग की लकिरिया
सइंया को मोरे पहिनाओ रे

(१)

सजदा करूँ मै यार को अपने
मेरे यार की यारी न पूछो
मेरे दिल को ज़िन्दा रक्खे
मस्तिये बादे बहारी न पूछो
ऐसे यार के सदक़े जाना
जानो जिगर क्यों वारी न पूछो

देबै रे... ... ...
... ...

(२)

मैं कछ ख़िदमत उनकी कर लूँ
हसरते दिल है यार की ख़ातिर
रौशन शमये वफ़ा से महफ़िल
ये महफ़िल है यार की ख़ातिर
नाम है उनका लब पर मेरे
मेरा जीना यार की ख़ातिर

देबै रे... ... ...
... ...

(३)

जज़्बये दिल को कामिल कर लो फिर देखो वो जलवा क्या है
जलवे में है रूह से मस्ती रूह सिवा कुछ होना क्या है
रूह मेरी औ उसकी एक ही अब दोनों में परदा क्या है
क्या बतलाऊँ यारो तुमसे मेरा श्याम सलोना क्या है

देबै रे··· ··· ···· ··· ··· ··· ···
····· ··· ··· ··· ··· ··· ····

[१३८]

वह ज़िक्र दम ब दम है दम से जुड़ा हुआ है

सूरत है उसकी दिल में दिल जगमगा रहा है
इस फ़र्श पर है जलवा और अर्श पर ख़ुदा है
देखो तो यार मेरा अब क्या बना हुआ है

वह ज़िक्र··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ·····

(१)

है नूरे ज़ाते अहमद जिससे बनी ख़ुदाई
सल्लू अलैक कहकर वह ज़ात मुस्कुराई
इस जानो दिल की ख़ातिर यह शाने किब्रियाई

वह नूरे पाक मौला दिल में बसा हुआ है

वह ज़िक्र··· ··· ··· ··· ··· ·· ··· ··· ··· ···

(२)

यह जानो तन का झगड़ा एक रोज़ तो मिटेगा
उसके सिवा नहीं कुछ तो और क्या रहेगा
सब कुछ वही है मेरा सब कुछ वही रहेगा

उसके ही हाथ सारा तन मन बिका हुआ है

वह ज़िक्र ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ·····

(३)

हमने शराबे मस्ती रोजे अज़ल में पी है
तक़दीर में हमारी रिन्दी लिखी हुई है
ये जिन्दगी हमारी मैख़ाने में कटी है

साक़ी है यार मेरा साग़र लिए खड़ा है

वह ज़िक्र··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

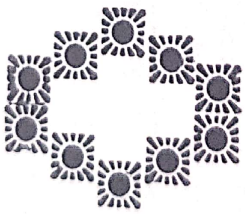

[१३९]

मेरा यार बड़ा अनमोल
ऐ दिल धीरे-धीरे बोल
सुन लेगी ये दुनिया सारी
राज न अपने जी के खोल
मेरा यार बड़ा… … … … …

(१)

देखो यार की यारी क्या है
चमन में रंगे बहारी क्या है
खिली हुई फुलवारी क्या है
दिल दुनिया में जारी क्या है
मेरा यार… … … … … …

(२)

उनसे रंगे बहारी क़ायम
उनके दम से दुनिया दायम
उनकी बातें नर्म मुलायम
उनकी याद में यह दिल क़ायम
मेरा यार बड़ा… … … … ……

(३)

जाने तमन्ना जाने वफ़ा है
इस दुनिया में मेरा ख़ुदा है
मेरा ख़ुदा है मेरा दिलबर
मेरे दिल में बसा हुआ है
मेरा यार बड़ा… … … … ……

★

[१४०]

तनी मारो नजरिया के तीर
बलम दिल घायल कइ देव

(१)

सासू न जानै ननदिया न जानै
ना जानै देवरा बे पीर

तनी मारो नजरिया के तीर
बलम दिल··· ··· ··· ··· ···

(२)

ऊँची अँटरिया पे बैठे महराना
नज़रों से ताकैं बनावें निसाना

हमरी बनायो तक़दीर

बलम दिल··· ··· ··· ···

(३)

देखत रहि जाऊँ ऐसा दिखाय देव
जोगन बन जाऊँ ऐसा बनाय देव

ऐसी करो तासीर

बलम दिल··· ··· ··· ···

(४)

आपन बनायो अपनै राख्यो
हमरे मा का है तुम सब जान्यो
तुम्हरी नजर अकसीर
तनी मारो··· ··· ··· ··· ···
बलम तनी··· ··· ··· ··· ···

[१४१]

ख़्वाजा तोंहसे लागी है नजरिया
करम की आई बेरिया ना

(१)

आप हैं सरतापा रहम आपकी ख़ुदाई
आप दया धरम करैं आप की दुहाई
आप सुनें दिल की सदा
आप लें खबरिया
ख़्वाजा··· ··· ··· ··· ···

(२)

आया है भिखारी कोई राजा के दुआरे
देखो तुम्हें ख़्वाजा बड़े दर्द से पुकारे
उतरो हो अटरिया तनी
झाँक लेव दुअरिया
ख़्वाजा··· ··· ··· ··· ···

(३)

कितने मस्त आये हैं हाले दिल सुनाने
ख़्वाजा तुम्हें हाले जिगर हाले दिल बताने
देखो तनी रंग रंग
आओ हो बजरिया
ख़्वाजा··· ··· ··· ··· ···
करम··· ··· ··· ··· ·····

★

[१४२]

पाक पन्जतन सात इमाम
अर्श बरीं पर ख़ास मुक़ाम

काबा काशी धरती धाम
नूरी आलम नूर तमाम
हे जग स्वामी तुम्हें सलाम

पाक पन्जतन सात इमाम
पीर औलिया क़ुतुब तमाम
हे जग स्वामी तुम्हें सलाम

(१)

पूजूँ देवता चौक बिठाऊँ
और मुक़द्दर को चमकाऊँ
माँगन जो मागूँ वह पाऊँ

दाता का जग में गुन गाऊँ
हे जग स्वामी... ... ...
पाक... ... ...
पीर... ... ...
हे ... ...

(२)

धरती तुमसे हरी भरी है
तुमसे क़ायम जग नगरी है
रब की रहमत उतर रही है
तुम पर सब की नज़र गड़ी है

हे जग··· ··· ··· ··· ·· ··· ··· ···
पाक··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· .....
पीर··· ··· ··· ··· ··· ··· .....
हे··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

[१४३]

मांगी मुराद हम पाये
पीर मोरे जुग जुग जीओ
ख़्वाजा मोरे जुग जुग जीओ
दाता मोरे जुग जुग जीओ

(१)

तुम सूरज तुम चन्दा साजन
तुमसे जग उजियारा हो
तुम जीवन के मीत मितइया
तुमसे बड़ा सहारा हो ।
मांगी मुराद··· ··· ··· ··· ···· ····

(२)

फ़ज़ले ख़ुदा हो तुम इस जग में
तुम रहमत की धारा हो
अबरे करम तुम बनकर बरसो
तुम सुख चैन हमारा हो
मांगी मुराद··· ··· ··· ··· ··· ····

(३)

हम मांगें तुम देवन हारे
अल्लह रूप तुम्हारा हो
सदा दया रखना मँगता पर
तुम दानी तुम दाता हो ।
मांगी मुराद··· ··· ··· ··· ···· ···

[१४४]

शैख़ जी सहने मस्जिद में सिजदा करें मन्दिरों में पुजारी सनम चूम के
कोई कुछ भी करे हमसे क्या वास्ता दीजिए आपके हम क़दम चूम के।

उनके ही ज़िक्र से चैन पाता है दिल याद ही उनकी अब ज़िन्दगी बन गई
फैसला हमने अब कर लिया है यही ज़िन्दगी सारी अपनी उन्हें सौंप दें।

इश्क़ था बावफ़ा हौसले से जिया उनके ही साथ दुनिया से जीकर उठा
आओ हम भी जरा ज़िक्र उसका करें अपना सर रखके उसके कदमचूम लें।

उनके ही दम से है ज़िन्दगी का भरम और ज़िन्दगी क्या उनका हो दम क़दम
चाहलें जिसको जैसा बनायें उसे उनकी मर्ज़ी पे है जिसको जो सौंप दें।

●

[१४५]

तुम हो साजन सबसे आला
तुमको पाकर मैंने जाना
मैं भी हूं एक किस्मत वाला

(१)

जाम सुराही पैमाना हो
तुम मस्ती हो मैख़ाना हो
तुमसे मूरत कौन सी अच्छी
तुम तो ख़ुद ही बुतखाना हो ।
तुम हो साजन... ... ...

(२)

तुम मेरे ईमान की दुनिया
जाने वफा हो जान की दुनिया
तुमपै निछावर है यह मेरी
सारी शान गुमान की दुनिया ।
तुम हो साजन... ... ...

(३)

तुमको हमने सब कुछ जाना
पापी मन की बात न माना
उस दुनिया औ इस दुनिया में
एक तुम्हीं से ठौर ठिकाना ।
तुम हो साजन... ... ...

ख़्वाजाजी सलाम करैं आपके सुगनवाँ
दया करो मिनती करैं धैलेबा चरनवाँ

(१)

आपही की बात बड़ी आप बड़े भारी
आप राजकाज करै आप तिलक धारी।
दुखियन को छाँव मिले तोहरे करनवाँ
ख़्वाजा जी सलाम ... ...

(२)

ख़्वाजा जी हम लाए हैं भाग जो लिखाई
राम लिखैं तोहरे बिना और के मिटाई
ख़्वाजा तनी ताक देव जी उठे परनवाँ
ख़्वाजा जी सलाम .. ..

(३)

नाथ हो अनाथों की लाज के रखैय्या
मंगता की झोली भरो भीख के देवैया
आपैका रहम करम जियतबा जहनवाँ
ख़्वाजा जी सलाम ... ...

★

[१४७]

अब तो हम यह काम करेंगे
साकी तेरा नाम करेंगे

(१)

उनको अपना राम करेंगे
मस्तों वाले काम करेंगे
अल्ला हू की ज़रब लगाकर
बरपा एक कोहराम करेंगे

अब तो हम यह... ... ...

... ...

(२)

उनके नाम का टीका देंगे
इश्क़ नगर आबाद करेंगे
उनको देख के ज़िन्दा होंगे
उनपे निछावर जान करेंगे

अब तो हम यह... ... ...

... ...

(३)

दीन धरम क्या जानें हम तो
इश्क़ में दिल बदनाम करेंगे
सुबह से अपने सर को उनके
क़दम पे रखकर शाम करेंगे

अब तो हम ... ...

... ...

(४)

हस्ती मेरी हस्ती होगी
उनके नाम की बस्ती होगी
हरदम होगा उनका चर्चा
हरदम ज़िक्र की मस्ती होगी

अब तो हम यह ... ...

साकी... ... ...

[१४८]

की नज़र मेरे दाता ने रहमत भरी

अब न बरबाद होगी ये मिट्टी मेरी
अब ये कश्ती किनारे पहुंच जायगी

(२)

हो अगर मर्ज़ कोई दवा चाहिए
हो जो बे आस तो आसरा चाहिए
आदमी के लिए एक् ख़ुदा चाहिए
वो जो मिल जाय तो और क्या चाहिए

की नज़र मेरे... ... ...

... ...

(१)

माँगा हमने तो उससे सिवा मिल गया
की वफ़ा तो जवाबे वफ़ा मिल गया
इश्क़ गहरा हुआ तो ख़ुदा मिल गया
हमने ढूढ़ा तो उसका पता मिल गया

की नज़र मेरे... ... ...

... ...

(३)

मिल गए हमको ज़िन्दा वली मिल गए
सैयदा फ़ातिमा और अली मिल गए
ग़ौसे आज़म के ऐसे धनी मिल गए
ख़्वाजा अजमेर ऐसे सख़ी मिल गए

की नज़र मेरे... ... ...

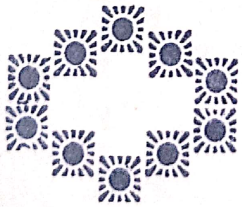

... ...

[१४९]

हमहूँ नहाइ लीन गंगा
सुनो हो गोरिया
होइ गा हमार मन चंगा
सुनो हो गोरिया

(१)

राम कसम जुल्मी ने ऐसी नज़र देखा है
हाय दई हाय दई रोम-रोम भीजा है
मस्त किया मधुवा ने हाल हुआ ऐसा है
हस्त हुई हस्ती तो रूप नया देखा है

हमहूँ नहाइ... ... ...
... ...

(२)

तिरछी नज़र तेज़ असर रोम रोम घेरे है
ऐसा रंग रंगे जुनूँ हाय ग़ज़ब फेरे है
दिल को वही एक अदा जाने हया घेरे है
एक सदा नाम वही मेरी वफ़ा टेरे है

हमहूँ नहाइ... ... ...
... ...

★

[१५०]

राम गली प्रेम बेल बाढ़ी सँवरिया
मोर-तोरि लाग गइ बाजी सँवरिया

(१)

रूप देखि मनई का हम नाहिं भरमाए
ठानि लिया दिल में कि अब दिल न कहीं जाए
जानि गए प्रीतम हैं इश्क़ बजा लाये
अल्ला के साथ जिए अल्ला हो जाए

मोर तोरि लाग ... ...

... .

(२)

जिसका नाम तुम ले लो नाम वही नाम बने
जिसपे नज़र हो जाये काम वही काम बने
हाथ जो हो साक़ी के जाम वही जाम बने
पहुँचे मगर तुम तक वही पहले जो बदनाम बने

मोर तोरि लाग... ... ...

... ...

★

[१५१]

तुम्हरे गुम्बद पे लागी नजरिया निजाम पिया

तुम्हरे रौजे पे लागी नजरिया निजाम पिया
आज तो हम गाना-बजाना करेंगे

(१)

दिल में बसे ख़्वाजा रहो आओ बिराजो
राज करो क़ुतुब पिया आओ बिराजो
बादशाहे गंजे शकर आओ बिराजो
चिश्ती चिराग़ जले आओ बिराजो

राज बढ़े ताज रहे सर पर तुम्हारे
और हम ग़ुलामों को सदक़ा दिलाना
आज तो हम गाना ....

(२)

दुनिया हमारी रंगे दिल में डूब जाय
याद एक ही हो बस और कुछ न याद आए
पास आये घड़ी-घड़ी, घड़ी-घड़ी दूर जाए
एक ही की बाँह पड़े सारी उमर बीत जाए

राज बढ़े ताज रहे सर पर तुम्हारे
आज तो हम गाना .....

[१५२]

है ये एलान साक़ी का रिन्दो जामो सागर जो कोई उठाए
है ये लाज़िम कि दिल पाक कर ले बेवजू मैकदे में न आये

दिल पियाला है इसमें गुलाबी साक़िए मैकदा ने जो डाली
इक नई ज़िन्दगी मुस्कुराई यह करम कोई कैसे भुलाये

आरज़ू इश्क़ की बस यही है ये तमन्ना ही दिल में बसी है
ऐसी हो जाय यह ज़िन्दगी भी आ सके काम कुछ तो तुम्हारे

ये मुहब्बत ही सब कुछ है मेरी वो गली ज़िन्दगी भर न भूली
जब जनाज़ा उठाना हमारा उस गली से ही होकर के जाये

(४)

सेजिया बिछइबै सइयाँ जो अइहैं
लोक लाज न रखइबै
अपने पिया को गरवा लगइबै
सोवत भाग जगइबै
मोर कोऊ का करीहै

सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे चाहा वइसे नचावा गुइयाँ बीच बजार
तोहरी बंसी पर हो बालम सब जिउजान निसार

(१)

हमका माँगी हमका चाहीं
बस तुम्हरी एक दया गोसाईं
तुमसे बढ़कर कोऊ नाहीं
तोहरी किरपा जग उजियार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे ... ... बजाए
तोहरी बंसी... ... ... निसार
सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार

(२)

ध्यान हमारा रखना साजन
मन के अन्दर बसना साजन
तुम मेरे सुख सपना साजन
तुमसे हार सिंगार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे ... ... बजाए
तोहरी बंसी... ... ... निसार
सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार

[१५७]

सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे चाहा वइसे नचावा गुइयाँ बीच बजार
तोहरी बंसी पर हो बालम सब जिउजान निसार

(१)

हमका माँगी हमका चाहीं
बस तुम्हरी एक दया गोसाईं
तुमसे बढ़कर कोऊ नाहीं
तोहरी किरपा जग उजियार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे ... ... बजाए
तोहरी बंसी... ... ... निसार
सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार

(२)

ध्यान हमारा रखना साजन
मन के अन्दर बसना साजन
तुम मेरे सुख सपना साजन
तुमसे हार सिंगार
हमका ई आकाश न धरती तोहरै एक सहार
जइसे ... ... बजाए
तोहरी बंसी... ... ... निसार
सच हो साजन तोहरै बाटी रहिबै सदा तोहार

[१५८]

खोलो हो सन्दल किवाड़ ई मन मानी ना देखे बिना

(१)

तुम्हरे कारन सब जग रूठे आए या जाए बहार
चाहे न होवे साँझ सबेरा रतिया न फूले हार सिंगार
चाहे बिखर जाय जीवन माला बिछड़े कुल संसार
अब हमरी बस चाह यही है हूँ कर जोड़े ठाड़
खोलो हो सन्दल ... ...

(२)

प्रेम अगन सुलगावै जोबनवाँ जारत तनिक अंगार
अंखिया से निदिया बैरन हो गई सोवै कुल संसार
भाग लिखे को विधना जानैं हमका न सोंच विचार
बान्धे बा प्रेम धरम की रेखा निसदिन एकै गुहार
खोलो हो सन्दल... ... ...

(३)

काबा काशी खेल खिलौना लड़िकन का बहकायं
गुड्डा गुड़िया ब्याह रचावैं आपन मन बहलायं
छिलका छीलो परत निकालो गूदा तब झलकायं
अन्हरन के घर बाजै बधावा हम नाहीं भरमायं
खोलो हो सन्दल... ... ...

[१५९]

सइयाँ दगेबाज मोरा जियरा डेराला

(१)

रंग भरी सेज सजी फुलवा बिछावा
तेल बिना बाती कै दियना जरावा
ध्यान लगा अलख जगी आपा गुमावा
आई गवा कबहूँ औ कबहूँ न आवा
सइयाँ दगेबाज... ... ...

(२)

साँझ भये मधुवन में बांसुरी बजाई
चोर चोर चोरी किया दौड़ो दौड़ो भाई
बात साफ साफ कहूं मैं बौराई
कैसा ढ़ीट हाय हाय कैसी चतुराई
सइयां दगेबाज... ... ...

(३)

लाग गई हिरदय में रोम रोम छाई
हरा हरा बन्ना बना हरी हरी भाई
मोल तोल भाव बिना भाव के बिकाई
सदा सदा इश्क़ फले इश्क़ की दोहाई
सइयां दगेबाज... ... .

[१६३]

हे गुरु बालम जाने आलम

आओ चलो नदिया के पार

कोयलिया बोलन लागी

हाय राम हाय

झुलनियाँ डोलन लागी

(१)

ऐसे जालिम रुत में कोई कैसे मन समझाए
तुमको छोड़ के औ कित देखे किससे जा बतलाए
किसकी ओर नजर भर देखे किससे दिल बहलाए
बीच गगन एक् नदिया गहरी लहर लहर लहराए
आओ चलो नदिया के पार.....

(२)

मेरी जवानी ऐसी दिवानी तनिक नहीं शर्माए
बिन्दराबन की कुन्जगली में श्याम श्याम चिल्लाए
आँख न मून्दे पलक नझपके बस चितवत रह जाए
ऐसी बहे हवा मस्तानी प्रेम अगिन दहकाए
हे गुरु बालम··· ··· ··· ··· ··· ···

(३)

मस्त बने यह दिल दीवाना मैख़ाने से मधुआ मंगाओ
तड़प उठे हर जर्रा दिलका ऐसी सलौनी झलक दिखाओ
प्यासा मनवाँ टेर लगावै झूठी आस पै काहे जिआओ
साथ न छूटे कभी तुम्हारा साजन ऐसी राह दिखाओ
आओ चलो नदिया के पार··· ··· ··· ··· ···

★

[१६४]

हे गंगा मैय्या तोहें पियरी चढ़ैइबै
पियवा से कैदा मिलनवा हो राम

(१)

मै व्याकुल इस जग के अन्दर मेरा दर्द न जाने कोई
फिरता रहा हूँ गलियों गलियों बरसों क्यों क्या जाने कोई
मेरी खस्ता हाल ग़रीबी मेरी बात न माने कोई
तुम एक् दर्द का रिश्ता जानो और मुझे क्या जाने कोई
मोरे पियवा से··· ··· ··· ··· ···
हे गंगा मैय्या··· ··· ··· ··· ···

(२)

रूह मेरी हो ज़िन्दा जिससे उससे मुझे मिलाओ जी
सूरत उसकी बसी हो जिसमें दुनिया वहीं बसाओ जी
फूलों में हो ख़ुशबू जिसकी ऐसा चमन खिलाओ जी
बे उसके क्या ज़िन्दा रहना दिल की ठंडक लाओ जी
हे गंगा मैय्या ··· ··· ··· ··· ···

(३)

नाथ हमारी सुधिया राख्यो तोहरी किरपा बहुत बड़ी है
नाव चली है धारे ऊपर गहरी नदिया बहुत चढ़ी है
देना भीख तो झोली भरके दानी के घर रीत यही है
मांगन एक यही मैं मांगू मेरी जीवन आस यही है
मोरे पियवा से··· ··· ··· ··· ···
हे गंगा मैय्या··· ···· ··· ··· ···

[१६५]

मानो मानो मोरा कहनवां
बालम का सोंचत हो मन माँ
खोलो तनी केवड़िया ना

(१)

मेरे दिल में बसी है क्या-क्या कभी तो वो भी कहने दो
हे भगवान हमारे अपनी कुछ तो सेवा करने दो
टीका काढ़ू मांग संवारूं नैना अंजन भरने दो
रात पड़े तो तुम सो जाओ मुझको पंखा झलने दो
खोलो तनी.....

(२)

तुमसे है कुछ नाता रिश्ता तो जग से भी नाता है
वरना यह किस काम की दुनिया दुनिया से क्या नाता है
जाने तमन्ना हुस्न तुम्हारा हालत अजब बनाता है
दर्द बढ़े तो राहत पाने ये दिल दौड़ा आता है
खोलो तनी.....

(३)

दर्द बसा है जब से दिल में तुमको भूल न पाये
हर-हर सांस पे शाम सबेरे प्रीतम तुम याद आये
मेरी क्या औक़ात कि मुझसे काम कोई बन पाये
फिर भी कुछ तो ख़िदमत ले लो दिल को चैन आ जाये
खोलो तनी.....

★

[१६६]

ग़मे इश्क़ में जो मिटा न हो मेरे दर्द को वह सराहे क्या
तेरे हाथ है मेरी आबरू कोई और मुझको निबाहे क्या।

जिसे कह सकूँ कि है ज़िन्दगी वह तेरे बग़ैर कहीं नहीं
जो न जी सका तेरे वास्ते भला फिर वह दुनिया से पाये क्या।

कोई उसको कैसे भुलाए कि वही एक वजहे सुकूने दिल
बड़ी मुश्किलों से जला जो हो वह चिराग़ कोई बुझाए क्या।

यह तमाम आलमे ख़ूबतर यह अजीब जल्वये बहरो बर
तेरी जैसी चीज़ न हो अगर तो निगाह में वो समाए क्या।

तेरे साथ साथ रहा तो है तेरे वासते ही जिया तो है
यह ग़रीब दिल कभी और कुछ तुझे अपने मुंह से बताए क्या।

[१६७]

तुम दया धरम की नज़र रखना सरकार हमें ठुकरायो ना
हम दीन अनाथ की लाज हो तुम हे नाथ हमें बिसरायो ना।

तुम हुस्न बने तुम इश्क़ बने तुम रंग बने इस दुनिया में
जो कुछ भी है सब तुमसे ही तो है सरकार हमें भरमायो ना।

हम शहरे वफ़ा के भिखमंगे तुम जानें चमन सरताजे जहां
ये हाथ अगर हम फैलायें तो जाने वफ़ा धुतकार्यो ना।

हम क्या माँगे हम क्या चाहें अब और कोई ख़्वाहिश ही नहीं
बस इतनी अरज़ है इस दिल की सरकार हमें भुलवायो ना।

क्या लाये थे औ क्या लेकर हम जायेंगे इस दुनिया से
एक् नज़रे करम की आस है बस हे नाथ हमें ठुकरायो ना।

★

तोरी प्यार भरी बतियाँ सुन सुन
अब लाग रही तोरे नाम की धुन
मगर एक नहीं कोई मुझमें गुन
ये अरज भी मोरी पिया मोरे सुन
अब लाग रही तोरे नाम की धुन

ये जो मन है मेरा तेरे साथ बसे
तुझे भूल जो जाए तो कैसे जिये
यही एक सहारा हूं दिल में लिये
कहाँ और किसे ये नसीब मिले
अब लाग रही तोरे नाम की धुन
तेरी प्यार भरी बतियां सुन सुन

तेरे नैन कटारी कटारी बने
तेरी जुल्फ़ शिकारी शिकारी बने
कोई क्यों न तुम्हारा पुजारी बने
सभी दर के तुम्हारे भिखारी बने
अब लाग रही तोरे नाम की धुन
तोरी प्यार भरी बतियाँ सुन सुन

रहे इश्क़ में मेरे बढ़े जो क़दम
तो यह दिल ने कहा कि ऐ मेरे सनम
खुद इतना मिटें तेरी चाह में हम
न हो तेरे सिवा कोई दर्दों अलम
बस लाग रही तोरे नाम की धुन
तोरी प्यार भरी बतियाँ सुन सुन

[१६९]

शहंशाहे जहाँ इस दिल में पैदा कर लिया मैंने
ख़ुदा जिसको कहें ऐसा नज़ारा कर लिया मैंने

वह इक तसबीरे जानाना चमन अन्दर परीख़ाना
बनाकर अपना काबा उसको सिजदा कर लिया मैंने।

नक़ाबे रूख उतारी बेख़ुदी में क़ैद से छूटे
ज़मी पे अपने जीने का सहारा कर लिया मैंने।

कहीं काबा न बुत खाना ये दिल है उनका दीवाना
इसी दीवानगी से दिल को ज़िन्दा कर लिया मैंने।

वह एक् रिंदे ख़राबाती जिसे पीरे मुग़ां कहिये
उसी पीरे मुग़ां से दिल का सौदा कर लिया मैंने।

[१७०]

नूर के सांचे में दिल ढलने लगा
अब ज़मी से आसमां मिलने लगा।

ज़िन्दगी बेकार थी थी तो मगर
जब से देखा उनको दिल बढ़ने लगा।

यार के कूचे में इसको ले चलो
दिल बहोत बेचैन सा रहने लगा

वह नज़र ऐसी कि फिर भूली नहीं
हर घड़ी एक् तीर सा चुभने लगा

नूर था वह नूर का साया न था
जिसने भी देखा ख़ुदा कहने लगा

★

[१७१]

कोयल कूक दई दैईया रे
आई नवल बहार

आग लगी बिरही के छतियाँ
हलकी पड़त फुहार
सावन रुत में उमगे जोबनवाँ
कैसे राखूं सम्भार
कोयल ... ...

हरे हरे पेड़ों पे फूले जो फुलवा
तो फूलों पे जियरा निसार
बगिया जो महकी तो जान पड़त है
अब अइहैं पियवा हमार
कोयल ... ...

लाल चुंदरिया मोरी रस भीगी
बिंदिया मोर उजियार
अपने पिया को जो देखन निकली
तो मिल गए सइयाँ बीच बजार
कोयल ... ...

[१७२]

साईं के मंदिरवा में दियना जराय आई ननदी

मोरी पत राखें बिहारी हमारे
मोरे गुसइयां मुरारी हमारे
उनको जो भावे रंगाय आई ननदी
साईं के ... ...

देखत हमें जो वलम मुसकाय दिहिन
जीवन की नइया किनारे लगाय दिहिन
मैं आपन घरवा बसाय आई ननदी
साईं के ... ...

तीरथ बरत न नेम कुछ साधा
जियरा जराय के निस दिन राखा
मैं आपन बलमा जगाय आई ननदी
साईं के ... ...